रजिस्ट्री सं० डी- 222

REGISTERED NO. D-222

भारत का राजपत्र
The Gazette of India

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं० 8] नई दिल्ली, शनिवार, फरवरी 19, 1966 (माघ 30, 1887)

No. 8] NEW DELHI, SATURDAY, FEBRUARY 19, 1966 (MAGHA 30, 1887)

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में रखा जा सके

Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation

नोटिस

NOTICE

नीचे लिखे भारत के असाधारण राजपत्र 7 फरवरी 1966 तक प्रकाशित किये गये थे :—

The undermentioned *Gazettes of India Extraordinary* were published up to the 7th February 1966 :—

अंक Issue No.	संख्या और तारीख No. and Date	द्वारा जारी किया गया Issued by	विषय Subject
27	No. 23-ITC(PN)/66, dated 31st Jan. 1966.	Ministry of Commerce.	E.P. Scheme for Ship repairing Revision of.
28	No. 15/4/61/EI, dated 1st Feb. 1966.	Do.	Amendment in the order No. 1/65, dated 10th Sept. 1965.
29	No. 3/4/66-Pub II, dated 1st Feb. 1966.	Ministry of Home Affairs	A short profile of Dr. Home Jehangir Bhaba, Chairman of the Indian Atomic Energy Commission.
30	No. 24-ITC(PN)/66, dated 7th Feb. 1966.	Ministry of Commerce.	Import of Dates S.No. 21(b)/N from Saudi Arabia, Muscat and other Persian Gulf Ports, excluding Iran and Iraq, during October 1965—Sept. 1966 on annual basis.

ऊपर लिखे असाधारण राजपत्रों की प्रतियां प्रकाशन प्रबन्धक, सिविल लाइन्स, दिल्ली के नाम मांगपत्र भेजने पर भेज दी जाएंगी। मांगपत्र प्रबन्धक के पास इन राजपत्रों के जारी होने की तारीख से दस दिन के भीतर पहुंच जाने चाहिएं।

Copies of the *Gazettes Extraordinary* mentioned above will be supplied on Indent to the Manager of Publications, Civil Lines, Delhi. Indents should be submitted so as to reach the Manager within ten days of the date of issue of these Gazettes.

विषय-सूची

(CONTENTS)

	पृष्ठ (Pages)
भाग I—खंड 1—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों तथा उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई विधीतर नियमों, विनियमों तथा आदेशों और संकल्पों से संबंधित अधिसूचनाएं	139
भाग I—खंड 2—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों तथा उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई सरकारी अफसरों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों, छुट्टियों आदि से संबंधित अधिसूचनाएं	155
भाग I—खंड 3—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी की गई विधीतर नियमों, विनियमों, आदेशों और संकल्पों से संबंधित अधिसूचनाएं	—
भाग I—खंड 4—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी की गई अफसरों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों, छुट्टियों आदि से संबंधित अधिसूचनाएं	101
भाग II—खंड 1—अधिनियम, अध्यादेश और विनियम	—
भाग II—खंड 2—विधेयक और विधेयकों संबंधी प्रवर समितियों की रिपोर्ट	—

	पृष्ठ (Pages)
भाग II—खंड 3—उप-खंड (i)—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और (संघ राज्य क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) केन्द्रीय प्राधिकारों द्वारा जारी किए गए विधि के अन्तर्गत बनाए और जारी किए गए साधारण नियम (जिनमें साधारण प्रकार के आदेश, उप-नियम आदि सम्मिलित हैं)	283
भाग II—खंड 3—उपखंड (ii)—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और (संघ-राज्य क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) केन्द्रीय प्राधिकारों द्वारा विधि के अन्तर्गत बनाए और जारी किए गए आदेश और अधिसूचनाएं	441
भाग II—खंड 4—रक्षा मंत्रालय द्वारा अधिसूचित विधिक नियम और आदेश	35
भाग III—खंड 1—महालेखापरीक्षक, संघ-लोक-सेवा आयोग, रेल प्रशासन, उच्च न्यायालयों और भारत सरकार के संलग्न तथा अधीन कार्यालयों द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं ..	123
भाग III—खंड 2—एकस्व कार्यालय, कलकत्ता द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं और नोटिसें ..	61
भाग III—खंड 3—मुख्य आयुक्तों द्वारा या उनके प्राधिकार से जारी की गई अधिसूचनाएं ..	23
भाग III—खंड 4—विधिक निकायों द्वारा जारी की गई विविध अधिसूचनाएं जिसमें अधिसूचनाएं आदेश, विज्ञापन और नोटिसें शामिल हैं ..	125
भाग IV—गैर-सरकारी व्यक्तियों और गैर-सरकारी संस्थाओं के विज्ञापन तथा नोटिसें ..	35
पूरक सं० 8—	
12 फरवरी 1966 को समाप्त होने वाले सप्ताह की महामारी संबंधी साप्ताहिक रिपोर्ट ..	251
22 जनवरी 1966 को समाप्त होने वाले सप्ताह के दौरान भारत में 30,000 तथा उससे अधिक आबादी के शहरों में जन्म, तथा बड़ी बीमारियों से हुई मृत्यु से संबंधित आंकड़े ..	263

PART I—SECTION 1.—Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations and Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court	139
PART I—SECTION 2.—Notifications regarding Appointments, Promotions, Leave etc., of Government Officers issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court	155
PART I—SECTION 3.—Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions, issued by the Ministry of Defence	—
PART I—SECTION 4.—Notifications regarding Appointments, Promotions, Leave, etc., of Officers issued by the Ministry of Defence	101
PART II—SECTION 1.—Acts, Ordinances and Regulations	—
PART II—SECTION 2.—Bills and Reports of Select Committees on Bills	—
PART II—SECTION 3.—SUB-SECTION (i)—General Statutory Rules (including orders, bye-laws, etc. of a general character) issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by Central Authorities (other than the Administrations of Union Territories) ..	283
PART II—SECTION 3.—SUB-SECTION (ii)—Statutory Orders and Notifications issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by Central Authorities (other than the Administrations of Union Territories) ..	441
PART II—SECTION 4.—Statutory Rules and Orders notified by the Ministry of Defence ..	33
PART III—SECTION 1.—Notifications issued by the Auditor General, Union Public Service Commission, Railway Administration, High Courts and the Attached and Subordinate Offices of the Government of India	123
PART III—SECTION 2.—Notifications and Notices issued by the Patent Offices, Calcutta ..	61
PART III—SECTION 3.—Notifications issued by or under the authority of Chief Commissioners	23
PART III—SECTION 4.—Miscellaneous Notifications including Notifications, Orders, Advertisements and Notices issued by Statutory Bodies	125
PART IV—Advertisement and Notices by Private Individuals and Private Bodies ..	35
SUPPLEMENT No. 8—	
Weekly Epidemiological Reports for week-ending 12th February 1966	251
Births and Deaths from Principal diseases in towns with a population of 30,000 and over in India during week-ending 22nd January 1966	263

भाग I—खण्ड 1

PART I—SECTION 1

(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों तथा उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई विधीतर नियमों, विनियमों तथा आदेशों और संकल्पों से संबंधित अधिसूचनाएं

Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court

---

राष्ट्रपति सचिवालय

नई दिल्ली दिनांक 26 जनवरी 1966

सं० 18-प्रेज/66—राष्ट्रपति, निम्नांकित व्यक्तियों द्वारा प्रदर्शित अति असाधारण विशिष्ट सेवाओं के उपलक्ष्य में उनको विशिष्ट सेवा मेडल "प्रथम श्रेणी" प्रदान करने का अनुमोदन करते हैं :—

लेफ्टिनेन्ट जनरल मोती सागर (आई० सी०-25) ।

मेजर जनरल अमरीक सिंह एम० सी० (आई० सी०-133) ।

मेजर जनरल राजिन्दर नाथ बख्शा (आई० सी०-446) ।

रियर एडमिरल बैंजामिन अब्राहम सेमसन ।

रियर एडमिरल सरदारीलाल मथरादास नन्दा ।

ब्रिगेडियर इरवर्थ जार्ज जैनकिन्स एम० सी० (आई० सी०-389) ।

ब्रिगेडियर जोरा सिंह (आई० सी०-3287) ।

ब्रिगेडियर ओंकार सिंह कलकट (आई० सी०-810) ।

एयर कमोडोर कृष्ण महेश अग्रवाल (1648), जी० डी० (एन) ।

सं० 19-प्रेज/66—राष्ट्रपति, निम्नांकित व्यक्तियों द्वारा प्रदर्शित असाधारण विशिष्ट सेवाओं के उपलक्ष्य में उनको विशिष्ट सेवा मेडल "द्वितीय श्रेणी" प्रदान करने का अनुमोदन करते हैं :—

कमोडोर जार्ज डगलस डी० एफ० सी० ।

एयर कमोडोर केकी नादिरशाह गोकल (1764) । जी० डी० (पी) ।

एयर कमोडोर विक्टर श्रीहरि (1624) जी० डी० (पी०) ।

ग्रुप कप्तान बाल भगवान मराठे (1915) । जी० डी० (पी०) ।

ग्रुप कप्तान त्रिलोक नाथ घडियोक, वीर चक्र (2354) जी० डी० (पी०) ।

ग्रुप कप्तान सुरिन्दर सिंह (3009) । जी० डी० (पी०) ।

ग्रुप कप्तान डेविड यूजेन बुच (2664), जी० डी० (पी०) ।

लेफ्टिनेन्ट इन्दरजीत शर्मा, आई० एन० ।

सं० 20-प्रेज/66—राष्ट्रपति, निम्नांकित व्यक्तियों द्वारा प्रदर्शित उच्च कोटि की विशेष सेवाओं के उपलक्ष्य में उनको विशिष्ट सेवा मेडल, 'तृतीय श्रेणी', प्रदान करने का अनुमोदन करते हैं :—

एक्टिंग कमाण्डर प्रवीन याज्ञनिक आई० एन० ।

एक्टिंग कमाण्डर गंडम आर्शीवादम आई० एन० ।

मेजर प्रेम नरायन केकर (आई० सी०-7041) गोरखा राइफल्स ।

मेजर मेहर सिंह ग्रेवाल (आई० सी०-777) आर्मी सर्विस कोर ।

मेजर सुभाष चन्द्र सरकार (एम० आर० 925) आर्मी मेडीकल कोर ।

स्क्वाड्रन लीडर इन्द्रकान्ती गोपाल कृष्ण (398), तकनीकी इंजीनियरिंग ।

स्क्वाड्रन लीडर नोरी सीताराम शास्त्री (5540), तकनीकी इंजीनियरिंग ।

स्क्वाड्रन लीडर देवकी नन्दन शर्मा (3913), तकनीकी आर्मामेंट ।

स्क्वाड्रन लीडर निवर्थी चित्तरंजन (5433), तकनीकी इंजीनियरिंग ।

स्क्वाड्रन लीडर तिन्नम नारायण वेंकटारमण (5133), तकनीकी इंजीनियरिंग ।

स्क्वाड्रन लीडर जगदीश मित्तर कौशल (5846), तकनीकी इलैक्ट्रीकल ।

स्क्वाड्रन लीडर जान अलवर्ट रतनम बलराज (4575), जी० डी० (पी०) ।

स्क्वाड्रन लीडर इकबाल सिंह (5361), तकनीकी इंजीनियरिंग ।

लेफ्टिनेन्ट अरविन्द रामचन्द्र दभीर, आई० एन० ।

लेफ्टिनेन्ट नरायणन वैद्यानाथन, आई० एन० ।

फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट कुंवर योगेन्द्र सिंह (5514), प्रशासनिक तथा विशेष ड्यूटीज ।

300098 सार्जेंट ओम प्रकाश मिधा, फिट्टर 2, एयरफ्रेम ।

जे सी-21432 नायब सूबेदार धन बहादुर थापा, गोरखा राइफल्स ।

46409 मास्टर वारंट आफिसर जान एन्थोनी जार्ज, म्यूजिशियन ।

सं० 21-प्रेज/66—राष्ट्रपति, निम्नांकित व्यक्तियों को उनकी असाधारण कर्त्तव्यपरायणता अथवा साहस के उपलक्ष्य में उनको "सेना मेडल" प्रदान करने का अनुमोदन करते हैं :—

1 सैकेण्ड लेफ्टिनेन्ट शिवराम सिंह थापा (ई०सी०-54419), 2री, बटालियन, गढ़वाल राईफल्स ।

21-22 नवम्बर, 1964 की रात्रि को सेकेण्ड लेफ्टिनेन्ट शिवराम सिंह थापा को, जो जम्मू एवं काश्मीर क्षेत्र में एक पिकेट की कमान कर रहे थे, पाकिस्तानी घुसपैठियों की गतिविधियों की सूचना मिली । घुसपैठियों से मुकाबले के लिये वह तुरन्त एक टोह टुकड़ी लेकर चल पड़े । जैसे ही टोह टुकड़ी उस क्षेत्र के पास पहुंची उस पर हल्की मशीन गन तथा राईफलों से गोलीबारी होने लगी । उन्होंने तुरन्त अपनी टुकड़ी को स्थिति लेने का आदेश दिया तथा अपने दल के पांच जवानों के साथ आगे बढ़े । घुसपैठियों की नजदीक से की जा रही लगातार तथा सही गोलीबारी के बावजूद सेकेण्ड लेफ्टिनेन्ट थापा अपनी जान पर खतरा उठा कर अपने दो जवानों के साथ रेंगते हुए एक पाकिस्तानी हल्की मशीन गन चौकी की ओर बढ़े और हथगोले फेंक कर उसे निष्प्रभाव कर दिया । इसी बीच पास की एक पाकिस्तानी पिकेट ने दो ग्राउंनिंग मशीन गनों से उनकी टुकड़ी पर गोलीबारी शुरू कर दी । अनेकों घुसपैठियों को मार कर सेकेण्ड लेफ्टिनेन्ट थापा सफलता-पूर्वक अपनी टुकड़ी के साथ गोलियों की बौछार में से होते

हुए वापिस आ गये तथा उनका कोई भी जवान नहीं मारा गया। इस कार्यवाही से उस क्षेत्र में घुसपैठियों की कार्यविधि को दुर्बल कर दिया।

सेकेण्ड लेफ्टिनेन्ट शिवराम सिंह थापा ने साहस, नेतृत्व तथा कर्त्तव्य-परायणता का परिचय दिया जो भारतीय सेना की उच्च परम्पराओं के अनुकूल था।

2 जे० सी० 5918 सूबेदार शंकर शिन्दे, 22वीं बटालियन, मराठा लाईट इन्फैन्ट्री।

3-4 जुलाई 1964 की रात्रि को सूबेदार शंकर शिन्दे को, जो 7 ओ० आर० की एक टुकड़ी की कमान कर रहे थे, आदेश हुआ कि वह जम्मू एवं कश्मीर में तारकुंडी क्षेत्र में पाकिस्तानी घुसपैठियों द्वारा बनाई एक चौकी पर आक्रमण करें। जैसे ही टुकड़ी चौकी के पास पहुंची, घुसपैठियों ने मशीन गन से भारी गोलाबारी आरम्भ कर दी। शत्रु की गोलाबारी की परवाह न कर सूबेदार शिन्दे टुकड़ी के साथ चौकी के पास खाईयों में पहुंच गये तथा शत्रु की स्थिति पर हथगोले फेंके जिससे 2 घुसपैठिये मारे गये तथा अन्य भाग गये। सूबेदार शिन्दे ने एक .38 पिस्तौल अपने कब्जे में कर ली तथा टुकड़ी को सुरक्षित वापस ले आए।

एक दूसरे अवसर पर जब उन्होंने एक क्षेत्र में जिसमें पाकिस्तानी गश्ती दल तथा सशस्त्र रजाकारों का होना बताया जाता था, धावा बोला और एक रजाकार को मार कर एक राइफल अपने कब्जे में कर ली।

इन दोनों अवसरों पर सूबेदार शंकर शिन्दे ने उच्चस्तर के साहस, कर्तव्यपरायणता तथा नेतृत्व का परिचय दिया जो कि भारतीय सेना की उच्च परम्पराओं के अनुकूल है।

3 जे० सी० –6028 सूबेदार प्रीतम सिंह, 5वीं बटालियन, सिख लाईट इन्फेन्ट्री।

31-मार्च-1 अप्रल 1965 की रात्रि को 2 ओ आर के साथ सूबेदार प्रीतम सिंह को जम्मू एंव कश्मीर में युद्ध विराम रेखा के पास एक स्थान पर टोह के लिये भेजा गया। टुकड़ी का उद्देश्य एक छोटी पहाड़ी थी। लक्षित स्थान पर पहुंच कर सूबेदार प्रीतम सिंह ने दोनों ओ आर को बायें तथा बायें पार्श्व में तैनात कर स्वयं रेंगते हुए आगे लक्ष्य तक पहुंचे। लगभग 11.15 बजे रात्रि उन्होंने लगभग 15 पाकिस्तानी घुसपैठियों को उसी पहाड़ी पर चढ़ते देखा। यद्यपि संख्या अत्यधिक थी किन्तु फिर भी उन्होंने शत्रु की टोह टुकड़ी से लड़ने का निश्चय किया। उन्होंने शत्रु के अग्रिम स्काउट को जब वह उनसे पांच गज की दूरी पर आ गया तो स्टेन गन से मार गिराया। इसके पश्चात् उन्होंने दूसरे स्काउट पर धावा बोला तथा टोह के अन्य सदस्यों पर हथगोले फैंके तथा अनेकों को या तो घायल कर दिया या मार गिराया। पाकिस्तानी टोह टुकड़ी ने तुरन्त स्थिति ले ली तथा दो हल्की मशीन गनों, राइफलों और स्टेन गनों से गोलीबारी आरम्भ कर दी। लगभग उसी समय 4 अन्य पाकिस्तानी मझौली मशीन गनों ने भी भारी गोलीबारी आरम्भ कर दी। सूबेदार प्रीतम सिंह निर्भय आगे बढ़े तथा पाकिस्तानी टुकड़ी के पास पहुंचे और एक स्काउट से एक कारबाईन मशीन स्टेन अपने कब्जे में कर ली। इस समय तक दो ओ आर भी उनके पास आ गये।

इस कार्यवाही में सूबेदार प्रीतम सिंह ने उदाहरणीय साहस, नेतृत्व तथा कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया जो कि भारतीय सेना की उच्च परम्पराओं के अनुरूप है।

4 3344754 नायक हरनेक सिंह, सिख रेजिमेन्ट

2–3 जनवरी 1965 की रात्रि को जब राईफलों से लैस पाकिस्तानी घुसपैठियों ने जम्मू एवं काश्मीर में हमारी एक चौकी पर कब्जा करने तथा वहां की जनता के घरों को लूटने की नीयत से भारतीय भूमि में घुस कर गोलाबारी की तो नायक हरनेक सिंह घात में बैठ गया। जब घुसपैठिये उनके करीब आगये तो नायक हरनेक सिंह तथा उनके साथियों ने उन पर गोली चलाना आरम्भ कर दिया। मुठभेड़ में जो उसके बाद हुई उन्होंने एक गन, एक सैवर हथिया लिया तथा 6 घुसपैठियों को मार गिराया जिनमें उनका लीडर एक कुख्यात रजाकार भी था।

इस कार्यवाही में नायक हरनेक सिंह ने विशिष्ट साहस, धैर्य तथा नेतृत्व का परिचय दिया जो कि भारतीय सेना की उच्च परम्पराओं के अनुकूल हैं।

5 नं० 4141092 नायक प्रेम सिंह, कुमाऊं रेजिमेंट।

नायक प्रेम सिंह उस टोह टुकड़ी के सदस्य थे जिसे 21–22 फरवरी, 1965 को उन पाकिस्तानी घुसपैठियों को रोकने के लिये भेजा गया था तो जम्मू एवं काश्मीर में युद्ध-विराम रेखा पार कर के आ गये थे। एक पाकिस्तानी टुकड़ी आ चुकी थी तथा उसने लगभग 100 गज की दूरी से गोली चलाना आरम्भ कर दिया। उसके बाद दूसरे दल ने 50 गज की दूरी से पार्श्व से गोली चलाना आरम्भ कर दिया। नायक प्रेम सिंह ने एक सिपाही के साथ शत्रु पर हमला किया। उन्होंने उनमें से एक को मार गिराया तथा अन्य पाकिस्तानी पहले दल के साथ भाग खड़े हुए। इस मुठभेड़ में उन्होंने एक राइफल कब्जे में कर ली।

इस कार्यवाही में नायक प्रेम सिंह ने उच्च कोटि के साहस तथा दृढ़ निश्चय का परिचय दिया जो भारतीय सेना की उच्च परम्पराओं के अनुकूल है।

सं० 22– प्रेज/66—राष्ट्रपति, निम्नलिखित व्यक्तियों को उनकी असाधारण कर्त्तव्य परायणता अथवा साहस के उपलक्ष्य में उनको "वायु सेना मेडल" प्रदान करने का अनुमोदन करते हैं :—

1 विंग कमाण्डर दिलबाग सिंह (2998), जनरल ड्यूटीज (पायलट)

विंग कमाण्डर दिलबाग सिंह ने मार्च 1963 में एम आई जी-21 लड़ाकू स्क्वाड्रन के बनने पर उसकी कमान संभाली तथा नये यूनिट की कठिनाइयों के बावजूद उन्होंने बहुत थोड़े समय में यनिट को संक्रिया के लिये तैयार कर दिया। स्क्वाड्रन की ट्रेनिंग के साथ साथ उन्हें नये पायलटों की ट्रेनिंग का कार्य करना पड़ा। विंग कमाण्डर दिलबाग सिंह ने 4400 घण्टे की दुर्घटना रहित उड़ानें एक इंजन वाले वायुयानों पर कीं जिसमें 1000 घण्टे की जेट फाइटर की उड़ानें हैं जो एक श्रेयस्कर सफलता है।

अपनी विशिष्ट बुद्धि, तथा उत्साह से विंग कमाण्डर दिलबाग सिंह ने अपने यूनिट को अफसरों तथा एअरमैनों की एक संगठित टीम में परिवर्तित कर दिया।

विंग कमाण्डर दिलबाग सिंह ने प्रशंसनीय व्यावसायिक कुशलता तथा कर्त्तव्य परायणता का परिचय दिया जो कि भारतीय वायु सेना की उच्च परम्परा के अनुरूप है।

2 स्क्वाड्रन लीडर सत्येन्द्र पाल त्यागी (4757), जनरल ड्यूटीज (पायलट)।

पाकिस्तान के विरुद्ध कार्रवाइयों के दौरान, स्क्वाड्रन लीडर सत्येन्द्र पाल त्यागी एक सामरिक (आपरेशनल)–स्क्वाड्रन के फ्लाइट कमाण्डर थे। उन्होंने राजस्थान सिंघ क्षेत्र में ग्यारह बार सामरिक-उड़ानें कीं, जिनमें से छः उड़ानें काफी नीची और शत्रु के जमाव वाले स्थानों के ऊपर सामरिक मिशनों से की गई थीं। इन सामरिक मिशनों को पूरा करते समय, उन्होंने विमान की उड़ान परिधि की चरम सीमा तक काम किया और प्रायः हर बार उन्हें शत्रु की विमानभेदी तोपों और हल्की मशीनगनों की गोलाबारी का सामना करना पड़ा। एक बार उनका विमान शत्रु के विमान-

भेदी फायर का निशाना बन गया, फिर भी उन्होंने खूबी से अपना काम पूरा किया। उन्होंने रात को कठिन परिस्थितियों में अपने बेस पर समाघात-हवाई गश्त-उड़ानें भी कीं। स्क्वाड्रन लीडर सत्येन्द्र त्यागी ने सराहनीय उड़ान-कुशलता और कर्त्तव्य निष्ठा का परिचय दिया।

3. स्क्वाड्रन लीडर रणजीत धवन (4572), जनरल ड्यूटीज (पायलट)।

पाकिस्तान के विरुद्ध कार्रवाइयों के दौरान, स्क्वाड्रन लीडर रणजीत धवन एक सक्रिय स्क्वाड्रन के फ्लाइट कमाण्डर थे। उनके स्टेशन पर खड़े हुए 25 नेट विमानों की जिम्मेवारी भी उन पर थी। और उन्हें इंजीनियरी और संक्रियात्मक कार्मिकों के बीच जरूरी तालमेल भी करना था। उन्होंने नेट विमान में कुल मिलाकर 44 संक्रिया-मिशन पूरे किए। इसके अतिरिक्त उन्हें अपने कमान के सभी विमानों की हवाई-उड़ानों की योजना बनानी थी और उनमें तालमेल रखना था। उनके नेतृत्व और योजना के ही कारण अच्छा काम करने वाले पाकिस्तानी विमानों के मुकाबिले हमारे नेट विमान ज्यादा शानदार काम कर सके। यद्यपि उन्होंने स्वयं तो शत्रु का कोई विमान नहीं गिराया लेकिन दूसरे संक्रिया-पायलटों ने उनके मार्गदर्शन और नेतृत्व में सफलताएं प्राप्त कीं। उनके हंसमुख स्वभाव ने तथा आकाश में शत्रु के विमानों को शिकार बनाने के उत्साह और लगन ने दूसरे पायलटों और भू-कर्मियों में भी कार्रवाइयों के दौरान अच्छे से अच्छा काम कर दिखाने की उमंग भर दी।

4. फ्लाइट लेफ्टीनेंट श्रीकृष्ण विष्णु फाटक (6358), जनरल ड्यूटीज (पायलट)।

पहली सितम्बर, 1965 को फ्लाइट लैफ्टीनेंट श्रीकृष्ण विष्णु फाटक चार विमानों की एक विरचना के विंगमैन थे। जब यह विरचना छम्ब में शत्रु के इलाके में प्रवेश कर रही थी, उन्हें शत्रु के कई विमान दिखाई दिए। उन्होंने उन विमानों की स्थिति की सूचना दी और स्वयं लीडर के पिछले भाग की रक्षा करने के लिए अपनी विरचना में डटे रहे। विरचना को आदेश दिया गया कि वह शत्रु को चकमा देने की कार्रवाई करे और ठीक सीधे हाथ को मुड़ जाये। मुड़ते समय, उनके विमान में शत्रु की गोली लग गई और विमान पर उनका पूरा नियंत्रण न रहा। फिर भी, वह विमान में डटे रहे। लगातार उसे नियन्त्रित करने का प्रयत्न करते रहे, परन्तु कुछ समय बाद उन्होंने देखा कि उनका विमान आग की लपटों से घिर गया है और आग बड़ी तेजी से फैल रही है। ऐसी परिस्थिति में भी उन्होंने साहस नहीं छोड़ा। उन्होंने कोशिश की कि अपने विमान को कम ऊंचाई से उड़ा कर ज्यादा ऊंचाई पर ले जाएं। जब वह ऐसा नहीं कर पाए तो उन्हें विवश हो कर अपना जलता हुआ विमान छोड़ना पड़ा।

भूमि पर उतरने के तुरन्त बाद, उन्होंने देखा कि उनके आसपास कुछ सैनिक हैं और क्योंकि उन्हें यह मालूम नहीं था कि वे कहां उतरे हैं, उनसे बच निकले किन्तु सशस्त्र सैनिकों का एक दल उन पर हावी हो गया और उन पर संगीनों से हमला किया एक संगीन तो उनके फेफड़ों में धंसने से बाल-बाल बची।

इस पूरी मुठभेड़ के दौरान फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट श्रीकृष्ण विष्णु फाटक ने बहुत उच्च कोटि का विवेक, व्यवसायिक कुशलता और कर्त्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

5. फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट किझानाथन रामबदरन राजगोपालन (4875), जनरल ड्यूटीज (पायलट)।

फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट किझानाथन रामबदरन राजगोपालन 1961 में जम्मू-कश्मीर में एक ट्रान्सपोर्ट स्क्वाड्रन में कार्य कर रहे हैं। इसके पहले वह नागा पहाड़ियों तथा नेफा क्षेत्र में संक्रिया उड़ान में रहे।

अपने थोड़े सेवा काल में फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट राजगोपालन ने 4000 घंटों की उड़ान की जिसमें 1300 घंटे की संक्रिया उड़ाने सम्मिलित हैं। उनका संक्रियात्मक उड़ान अनुभव स्क्वाड्रन के लिये बड़ा लाभकारी रहा है तथा उन्होंने अनेक अवसरों पर स्वेच्छा से लद्दाख में अग्रिम क्षेत्र के एकाकी स्थानों पर सामान गिराने की कठिन उड़ानें कीं। अपनी संक्रिया क्षेत्रों की उड़ानों में उन्होंने सराहनीय व्यवसायिक कुशलता का परिचय दिया जो स्क्वाड्रन के अन्य सदस्यों के लिये भारतीय वायु सेना की उच्च परम्परा के अनुरूप उत्साह का साधन रही।

6. फ्लाइट अफसर नरिन्द्र सिंह साहनी (6492), जनरल ड्यूटीज (नेवीगेटर)।

फ्लाइंग अफसर नरिन्द्र सिंह साहनी जम्मू एवं कश्मीर में 1962 से एक ट्रान्सपोर्ट स्क्वाड्रन में नेवीगेटर का कार्य कर रहे हैं। थोड़ी सर्विस होने के बावजूद अपने उत्साह के कारण उन्होंने लद्दाख में अग्रिम क्षेत्र के एकाकी स्थानों पर महत्वपूर्ण मिशनों के लिए 1100 घंटों की संक्रियात्मक उड़ानें कीं। वह सदैव प्रसन्नता से कठिन उड़ानों के लिए तत्पर रहे तथा इन उड़ानों की सफलता उनके क्षेत्रों के निजी ज्ञान के कारण रही। खराब मौसम तथा मौसम के हालात के अज्ञात होने पर भी उन्होंने अपनी सुरक्षा की परवाह न करके संक्रियात्मक उड़ानें कीं जो कि उनके साथियों के लिए प्रेरणा का साधन बनीं।

फ्लाइंग अफसर नरिन्द्र सिंह साहनी ने व्यवसायिक कुशलता तथा कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया जो कि भारतीय वायु सेना की उच्च परम्परा के अनुरूप हैं।

7. पायलट अफसर सुब्रामणिया शंकरन (7127), टैक्निकल /आर्मामेन्ट।

पाकिस्तान के विरुद्ध कार्रवाइयों के दौरान, पायलट अफसर सुब्रामणिया शंकरन को छुट्टी से वापिस बुला कर, अग्रिम विंग पर भेज दिया गया। उन्हें आदेश दिया गया कि वह अपने अड्डे के डेली सर्विसिंग सेक्शन की जिम्मेवारी संभालें। इस अड्डे पर उनकी अपनी स्क्वाड्रन के ही विमान नहीं थे, बल्कि दूसरी यूनिटों के विमान भी थे। प्रातः 4-30 बजे ही पहला सशस्त्र गश्ती दल विमान में सवार हो जाता था। तब से चौबीसों घंटें विमानों की जरूरत रहती थी। हालांकि वे स्वयं तो आर्मामेन्ट अफसर ही थे, लेकिन उन्होंने अपने काम की जानकारी को ही काफी न समझ कर दूसरी दस्तकारियों की भी काम-चलाने लायक जानकारी प्राप्त की। बहुत थोड़े समय में वह इतने अनुभवी बन गए कि डेली सर्विसिंग सेक्शन को बड़ी कुशलता से चला सके और उसके कार्यों में इस तरह तालमेल बैठाया कि दूसरे अगले मोर्चों की टुकड़ियों की मांगें भी वह पूरी कर सके। कई बार तो उन्हें दिन में 17 घंटे तक काम करना पड़ा। कई कई दिनों तक, पायलट अफसर सुब्रामणिया शंकरन ने डेली सर्विसिंग सेक्शन के अहाते से बाहर नहीं जा सके।

अपने काम को पूरा करने में, पायलट अफसर सुब्रामणिया शंकरन ने सराहनीय कर्तव्य-निष्ठा, महान कुशलता और अच्छे नेतृत्व का परिचय दिया। अनेक बाधाओं और कठिन परिस्थितियों में काम करके, उन्होंने अपने आसपास से सभी व्यक्तियों के लिए एक प्रेरणादायक आदर्श प्रस्तुत किया।

8. 48217 मास्टर सिगनलर (एयर) श्री राम बोहरा।

मास्टर सिगनलर श्री राम बोहरा जम्मू एवं कश्मीर में संक्रिया में लगे हुए एक ट्रान्सपोर्ट स्क्वाड्रन में वलिष्ठ एयर सिगनलर की हैसियत से कार्य करते रहे हैं। यह उनका दूसरा कार्यभार है। इसके पहले भी उन्होंने इस क्षेत्र तथा नेफा में संक्रियात्मक कार्य किया है। पहले की एक उड़ान में वह जम्मू एवं कश्मीर में एक उड़ान दुर्घटना में फंस गए थे। दुर्घटना के होने के बावजूद वह स्क्वाड्रन को दिए गए मिशनों में प्रसन्नता से अपने को कठिन भूभाग तथा प्रतिकूल मौसम में उड़ने के लिए अर्पित किया। 22 महीने के दौरान में

उन्होंने 1000 घंटों की संक्रियात्मक उड़ानें कीं। मास्टर सिगनलर वोहरा स्वयं को उड़ाने के लिए अर्पित करते जबकि दूसरे सिगनलर उपलब्ध नहीं होते थे और इस प्रकार अपने उदाहरण से उन्होंने अपने साथियों में विश्वास उत्पन्न किया।

मास्टर सिगनलर श्री राम वोहरा ने कर्तव्यपरायणता तथा व्यावसायिक कुशलता का परिचय दिया जो कि भारतीय वायु सेना की उच्च परम्परा के अनुरूप है।

9. 21034 (सिगनलर-1) वेद कुमार शर्मा।

सिगनलर वेद कुमार शर्मा जम्मू तथा कश्मीर में 1961 से एक ट्रान्सपोर्ट स्क्वाड्रन में कार्य कर रहे हैं तथा उन्होंने 2500 घंटों की उड़ानें की हैं जिसमें 1800 घंटे की संक्रियात्मक उड़ानें हैं। अपनी सुरक्षा की चिन्ता किए बिना सिगनलर शर्मा ने लद्दाख में एकाकी स्थानों पर सामान पहुंचाने की करीब प्रत्येक कठिन उड़ान के लिए अपने को अर्पित किया। उन्होंने एक दिन में 10 घंटे तक की उड़ान की तथा सदैव प्रसन्न दिखाई पड़े। इस प्रकार उन्होंने अपने साथियों में विश्वास उत्पन्न किया।

सिगनलर वेद कुमार शर्मा ने सराहनीय कर्तव्यपरायणता तथा व्यवसायिक कुशलता का परिचय दिया जो कि भारतीय वायु सेना की उच्च परम्परा के अनुरूप है।

सं० 23-प्रेज/66—राष्ट्रपति, निम्नांकित व्यक्तियों को उनकी असाधारण कर्त्तव्यपरायणता अथवा साहस के उपलक्ष्य में उनको "नौ सेना मेडल" प्रदान करने का अनुमोदन करते हैं:—

1. कमाण्डर चेरुवस्सेरी वारिजाक्षन् नेदुंगडी।

22 जुलाई, 1965 को, कमाण्डर चेरुवस्सेरी वारिजाक्षन् नेदुंगडी को, जो भारतीय नौसेना के 'धरिणी' नामक जहाज़ की कमान कर रहे थे, यह आदेश हुआ कि वह ग्रीक जहाज़ एस०एस० 'मारिविकी' के कर्मियों को बचाए, जो गोआ से लगभग 20 मील दूर तूफानी समुन्द्र में टूट गया था। 'धरिणी' पहले मालवाही जहाज़ था, इस लिए उसकी शक्ति बहुत कम और अधिक से अधिक रफ्तार 8 समुंद्री मील (नाट) है। उस समय मौसम तूफानी था, समुन्द्र में ऊंची-ऊंची लहरें उठ रहीं थी और लगातार वर्षा के कारण दिखाई भी बहुत कम पड़ता था। कमाण्डर नेदुंगडी ने अपने जहाज़ का बड़े साहस तथा कुशलता से संचालन किया और वह फंसे हुए कर्मियों को बचाने के लिए अपना जहाज़ 'मारिविकी' के पास तक ले गए, हालांकि इसमें खुद 'धारिणी' के टूट जाने का भारी खतरा था। समुन्द्र तूफ़ानी था और नावों को धुआंधार वर्षा, तेज़ हवा और ऊंची-ऊंची लहरों के थपेड़े सहते हुए जाना पड़ता था। फिर भी, कमाण्डर नेदुंगडी ने बड़े साहस और दृढ़ निश्चय से इस कार्रवाई की योजना बनाई और उसे पूरा किया। उनके द्वारा 'धरिणी' के कुशल संचालन और चतुर नेतृत्व के अभाव में, 'मारिविकी' के कर्मी वहीं समाप्त हो जाते।

ऐसी भयानक स्थिति में इस अफसर ने जिस सूझबूझ और साहस का परिचय दिया, वह भारतीय नौसेना की सर्वोच्च परम्पराओं के अनुकूल ही थीं।

2. लेफ्टिनेन्ट कमाण्डर विद्या भूषण।

लेफ्टिनेन्ट कमाण्डर विद्या भूषण भारतीय नौसेना के जहाज 'मगर' की कमान कर रहे थे। यह जहाज लगभग 1,600 टन मिट्टी हटाने और जंगल साफ़ करने की भारी मशीनें भारत की मुख्यभूमि से अन्डमान-द्वीपसमूह पहुंचाने के काम पर लगा था। 'मगर' के परिमाण जैसे जहाज़ को पुलिन पर लगाने का कार्य बहुत कठिन है और यह कार्य और भी कठिन था क्योंकि 'मगर' बहुत ही पुराना जहाज़ था।

ढालों, रुकावटों आदि का पता लगाने के लिए पुलिन-सर्वेक्षण तथा प्रारम्भिक टोह कार्य कराने सम्भव न थे। लेफ्टिनेन्ट कमाण्डर भूषण ने परिस्थिति को बड़ी कुशलता से संभाला। स्थानीय और काम चलाऊ साधनों का उपयोग करके और जानबूझ कर खतरा उठा कर, कठिन नौ-चालन परिस्थितियों में भी उन्होंने जहाज़ को सही-सलामत, ठीक समय पर पुलिन पर लगा दिया।

लेफ्टिनेन्ट कमाण्डर विद्या भूषण के प्रेरक नेतृत्व में, जहाज़ की कर्मी-टोली ने भारतीय नौसेना की सर्वोच्च परम्पराओं के अनुकूल आचरण किया और इस कठिन काम को किसी व्यक्ति के बिना हताहत हुए अथवा दुर्घटना के पूरा कर दिखाया।

3. लेफ्टिनेन्ट कमाण्डर हरबर्ट सोन्स।

22 जुलाई 1965 को लेफ्टिनेन्ट कमाण्डर हरबर्ट सोन्स भारतीय नौसेना के जहाज़ 'धरिणी' के ऐक्ज़ीक्यूटिव अफसर थे, जब कि 'धरिणी' को एस०एस० मारिविकी को बचाने के लिए भेजा गया था जो गोआ से 20 मील पर टूट गया था। मौसम तूफानी था, समुन्द्र में ऊंची-ऊंची लहरें उठ रहीं थी और मानसूनी धुआंधार वर्षा हो रही थी।

लेफ्टिनेन्ट कमाण्डर सोन्स उस नाव के प्रभार-अफसर थे जो 'धरिणी' से एस०एस० मारिविकी के ध्वंसावशेष के पास भेजी गई थी। वह अपनी नाव के कर्मियों को समुन्द्र की ऊंची-ऊंची लहरों और तूफानी हवा की चुनौती का डट कर सामना करने के लिए प्रोत्साहित करते रहे। वे कर्मी भी उनके नेतृत्व में लगभग चार घंटे तक चप्पू चलाते रहे। थक कर चूर हो जाने पर भी, उन्होंने बचाने की कार्रवाई तब तक जारी रखी जब तक कि एस०एस० मारिविकी से अन्तिम व्यक्ति सुरक्षित रूप से भारतीय नौसेना के जहाज़ 'धरिणी' पर नहीं पहुंच गया। इन कठिन परिस्थितियों में भी, उन्होंने कई चक्कर लगा कर 27 व्यक्तियों को बचा लिया।

इस कार्रवाई में लेफ्टिनेन्ट कमाण्डर हरबर्ट सोन्स ने भारतीय नौसेना के सर्वोच्च परम्पराओं के अनुकूल दृढ़ निश्चय, नेतृत्वशक्ति और कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया है।

4. सब-लेफ्टिनेन्ट (एस डी) (टी ए एस) अनन्त राम।

सब-लेफ्टिनेन्ट अनन्त राम ने 1961 से राष्ट्रीय प्रायोजनाओं तथा नौसेना कार्यों में गोताखोरी से महत्वपूर्ण योगदान दिया है। सितम्बर 1964 में जब बाम्बे फ्लाइंग क्लब का एक पाईपर कब वायुयान बम्बई से अहमदाबाद जाते समय ध्वस्त हो गया तो सब-लेफ्टिनेन्ट अनन्त राम को एक गोताखोर टुकड़ी के साथ उसे खोजने के लिए भेजा गया। रूक्ष समुन्द्र, तेज धारा तथा अत्याधिक गहरा पानी होने के बावजूद सब-लेफ्टिनेन्ट अनन्त राम ने वायुयान के खोजने का निश्चय किया और उन्होंने उस समय तक खोज जारी रखी जब तक कि यह नहीं तय किया गया कि इसे समाप्त किया जाय क्योंकि यह स्पष्ट हो गया था कि वायुयान गहरे दल-दल में डूब गया था।

नवम्बर 1964 में गुजरात विद्युत बोर्ड की प्रार्थना पर सब-लेफ्टिनेन्ट अनन्त राम ने एक गोताखोर टुकड़ी के साथ माही नदी से एक स्टील काफर-डैम को निकालने का कार्य किया जो खैरा जिले में स्थित नए विद्युत घर के पम्प घर में नदी के पानी को जाने से रोक रहा था। नदी में लगातार मिट्टी के कटाव, बाढ़ तथा मटमैले पानी की वजह से अंधेरे के कारण कार्य अत्याधिक कठिन तथा जोखिम का हो गया। इन सब जोखिमों के बावजूद सब-लेफ्टिनेन्ट अनन्त राम ने आधार से 8 फिट नीचे काफर-डैम के काटने की संक्रिया में अपनी टुकड़ी का सफलतापूर्वक नेतृत्व किया।

सम्पूर्ण कार्यवाही में सब-लेफ्टिनेन्ट अनन्त राम ने उदाहरणीय साहस, व्यवसायिक कुशलता तथा कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया जो भारतीय नौसेना की उच्च परम्पराओं के अनकूल थीं।

5. पेटी अफसर दसारि नरसिंह राव रेड्डी,

इंजीनियरिंग मैकेनिक, ओ० नं० 44992।

5 जून, 1965 को, जब पेटी अफसर दसारि नरसिंह राव रेड्डी भारतीय नौसेना के 'खुकरी' जहाज़ के आक्ज़ीलियरी बायलर की देखरेख की ड्यूटी पर थे, तब अचानक बायलर में प्रति-विस्फोट

हुआ और उसकी लपट से काफ़ी आग लग गई। पेटी-अफसर रेड्डी अपनी जगह से न हिले, हालांकि उनका चेहरा और हाथ झुलस गए थे। अपने प्रोणों को हथेली पर रख कर, वह तेजी से फैलती लपटों से जूझते रहे। यदि उस समय बायलर फट जाता तो अत्यधिक गर्म भाप में झुलस कर रह जाते, पर उन्होंने इस खतरे की भी कोई चिन्ता न की।

झुलस जाने पर भी पेटी-अफसर रेड्डी अकेले ही, सहायता पहुंचने तक, लपटों को फैलने से रोकते रहे। इस प्रकार उन्होंने भयंकर विनाश को टाल दिया।

जिस साहस और कर्त्तव्यपरायणता का परिचय पेटी-अफसर दसारि नरसिंह राव रेड्डी ने दिया, वह भारतीय नौसेना की सर्वोच्च परम्पराओं के अनकूल ही था।

6. पेटी-अफसर (यू डब्ल्यू आई) गोपालकृष्णन लक्ष्मण दास, ओ नं० 33453।

पेटी-अफसर गोपालकृष्णन लक्ष्मण दास अन्डेमान में नौसैनिक गैरिसन के गोतामार और विध्वंस सेक्शन के प्रभारी थे। पोर्ट ब्लेयर बंदरगाह के चुने हुए स्थानों में से प्रवाल-जाल और पानी के भीतर दूसरी रुकावटों को साफ करने का काम इनके सेक्शन को सौंपा गया था। इस काम को करते समय चाथम टापू के पश्चिमी इलाके में पानी के भीतर जापानियों द्वारा बिछाई गई सुरंगें और बेफटे बम दिखाई पड़े। इनको सुरक्षित करने का एक ही तरीका था कि इन्हें एक-एक करके भिन्नी खाड़ी में ले जाया जाए और इनका विस्फोट कर दिया जाए।

पेटी-अफसर दास ने इस खतरनाक काम को स्वयं अपने हाथों में लिया। बम इतने खराब हो चके थे कि मामूली से झटके से भी बहुत विनाशकारी विस्फोट होने का खतरा था। लेकिन अपने संयमित साहस और बमों व सुरंगों की सफाई के ज्ञान से काम लेते हुए पेटी-अफसर दास ने यह कार्य बड़ी सफलता से पूरा किया और इस तरह एक संभावित खतरे को पास के गोदी के इलाके से दूर कर दिया।

पेटी-अफसर गोपालकृष्णन लक्ष्मण दास ने नौसेना की सर्वोच्च परम्पराओं के अनुकूल साहस और कर्त्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया है।

7. लीडिंग सीमैन ईश्वर दत्त मिश्रा, ओ नं० 47445, (मरणोपरान्त)

लीडिंग सीमैन एक अनुभवी गोताखोर थे तथा उन्होंने अनेकों गोताखोरी की संक्रियाओं में भाग लिया। 5 मई से 16 जून, 1964 तक वह उस गोताखोर टुकड़ी के सदस्य थे जिसने 70 फुट गहराई में हीराकुंड डैम के गेटों की मरम्मत का कार्य किया था। सितम्बर 1964 में वह उस टुकड़ी में थे जिसने सोनीपत में डूबी हुई नाव को निकाला था। अक्टूबर, 1964 से वह बसईधारा पुल, दिल्ली, पर डूबे हुए पुल को हटाने की संक्रिया में सम्मिलित थे। नवम्बर-दिसम्बर 1964 में उन्होंने हीराकुंड डैम पर चिपलीमा विद्युत घर पर एक फाउल गेट को साफ करने की संक्रिया में भाग लिया। 17 दिसम्बर 1964 को जब वह राउर-केला में 35 फुट गहराई पर गेट के एक छेद को भरने के लिए गोताखोरी में लगे हुए थे तो उनका पैर फंस गया जिसे वह पानी के तेज बहाव के कारण निकाल नहीं सके तथा उनकी मृत्यु हो गई।

लीडिंग सीमैन ईश्वरदत्त मिश्रा ने सदैव उदाहरणीय साहस, व्यवसायिक कुशलता और कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया जो कि भारतीय नौसेना की सर्वोच्च परम्पराओं के अनुरूप है।

8. एबल सीमैन कंस राज, ओ० नं० 67634।

22 जुलाई 1965 को एबल सीमैन कंस राज भारतीय नौसेना के धरिणी नामक जहाज के रुहेलर पर कोक्सस्वैन की ड्यूटी पर थे। तभी जहाज को आदेश दिया गया कि वह ग्रीक जहाज एस०एस० मारिविकी के कर्मीदल को बचाए जो चट्टानों से टकरा कर टूट गया था। उस समय समुद्र में तूफान था और ऊंची-ऊंची लहरें उठ रही थीं और बड़ी तेज बारिश हो रही थी। कर्मीदल को बचाने के लिए चप्पुओं वाली नाव को मारिविकी के करीब ले जाना खतरनाक कार्य था। इस कार्य में खतरा यह था कि लहरें नाव को धकेल कर टूटे जहाज से न टकरा दें। ऐसा होने से नाव तो खत्म होती ही उसमें बैठे हुए व्यक्ति भी डूब जाते। लेकिन खतरे की परवाह न करते हुए एबल सीमैन कंस राज मारिविकी के पास अपनी नाव कई बार ले गया और उसके कर्मीदल के सभी 27 सदस्यों को बचा लिया।

कर्मीदल को बचाने का काम लगभग चार घण्टे तक चलता रहा और बेहद थकावट के बावजूद यह नाविक तूफान और ऊंची लहरों से लड़ता रहा और जब तक टूटे हुए जहाज से अन्तिम व्यक्ति को न बचा लाया, उसने दम नहीं लिया।

एबल सीमैन कंस राज ने नौसेना की सर्वोच्च परम्पराओं के अनुकूल कुशलता और साहस का परिचय दिया।

9. सब-लेफ्टिनेन्ट टी० अप्पूकुट्टन, आई एन वी आर।

10. एल ई एम अरि० दलीप सिंह बलहारन, ओ० नं० 49371।

11. एल एम ई० आई एच नहघर, ओ० न० 66125।

12. एस ए० नारायन चन्द्र सरकार, ओ० नं० 80984।

13. एबल सीमैन दया नन्द, ओ०न० 87857।

14. एबल सीमैन राम सरन सिंह, ओ० नं० 86482।

25 दिसम्बर 1964 को आई एन एस शारदा धनुष कोडी में ज्वार-भाटीय तरंगों के आने के कारण फंसे हुए व्यक्तियों को निकालने की संक्रिया में लगा हुआ था। सब-लेफ्टिनेन्ट टी० अप्पू-कुट्टन ने, जो आई एन एस शारदा के कार्यकारी अधिकारी थे, संचार व्यवस्था स्थापित करने के लिए कठिन प्रतिकूल मौसम के होने पर भी सेलरों की एक पार्टी का अग्रमन करने के लिए अपने को अर्पित किया। अपनी सुरक्षा की परवाह न करके-सब-लेफ्टिनेन्ट अप्पूकुट्टन तथा अन्य सेलरों ने काफी समय तक अथिक परिश्रम कर करीब 1500 आदमी बचाए।

इस कार्यवाही में सब-लेफ्टिनेन्ट टी० अप्पूकुट्टन तथा उनकी पार्टी के अन्य सेलरों ने साहस, दृढ़निश्चय तथा कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया जो कि भारतीय नौसेना की उच्च परम्परा के अनुरूप थे।

15. स्टीवर्ड करतार सिंह, ओ० न० 80276।

27 फरवरी 1964 को आई एन एस अक्षर अन्डेमान में कसूरीना की खाड़ी में लंगर डाले था। एक टोह टुकड़ी जहाज से उतर कर एक नाव पर कसूरीना खाड़ी के किनारों की टोह करने के लिए गई। टोह-कार्य के पूर्ण होने पर टुकड़ी ने नाव को चलाने का तीन बार प्रयत्न किया किन्तु भारी समुद्री झाग की दलदल में फंसने के कारण वे ऐसा न कर सके। एक दूसरी नाव को एक बचाव टुकड़ी के साथ भेजा जिसके स्टीवर्ड करतार सिंह एक सदस्य थे। नाव को किनारे से दूर रुकना था जहां पर समुद्री उपद्रव कम हो। बाकी रास्ते में भारी समुद्र-फेन 5 से 7 फुट की ऊंचाई लिए हुए था। इन परिस्थितियों के बावजूद करतार सिंह ने एक रस्सी के साथ किनारे तक तैर कर जाने के लिए अपने को अर्पित किया। वह किनारे पर, जहां प्रथम नाव थी, सुरक्षित पहुंच गया तथा रस्सी से नाव को बांधने का कार्य किया। चूंकि वहां पर दूसरी रस्सी नहीं थी करतार सिंह नाव के साथ वापस आने के बाद रस्सी को दोबारा आदमियों को निकालने के लिए ले गए। इसके बाद रस्सी के सहारे अन्य आदमी दूसरी नाव पर आ गए। उनमें से एक के पेट में पानी भर जाने के कारण रस्सी के सहारे भी नहीं आ सकता था। अपनी रक्षा की परवाह किये बिना करतार सिंह तैर कर गए और समुद्रफेन में से उसे बाहर निकाला और नाव तक ले आए।

इस कार्यवाही में स्टीवर्ड करतार सिंह ने उदाहरणीय साहस तथा कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया जो भारतीय नौसेना की उच्च परम्परा के अनुरूप है ।

16. टेलीग्राफ़िस्ट गोताखोर III मदन गोपाल संदल, ओ० नं० 47655 ।

3 मई 1965 से 3 जून 1965 के दौरान, तुंगभद्रा बांध पर काम में लगे नौसैनिक गोताखोरों में टेलीग्राफिस्ट गोताखोर मदन गोपाल संदल भी थे । उन्हें पनबिजली योजना के पैनस्टाक दरवाजों को पानी में उतर कर वेल्ड करने का काम सौंपा गया । काम बड़ा पेचीदा और जरूरी था और इसके लिए काफी देर तक पानी के भीतर रहना पड़ता था । उन्हें एक आदमी के बोझ वाली पूरी गोताखोर पोशाक पहन कर एक सीढ़ी से दिन में कई बार नीचे उतरना और ऊपर चढ़ना था । पानी के भीतर थका देने वाले काम को अद्वितीय सहनशक्ति से पूरा करके वे अपने को संभालते हुए ऊपर आए । भारी थकावट के बावजूद टेलीग्राफिस्ट संदल बिना विश्राम के लगातार काम करते रहे और अंत में सफलता से काम पूरा कर डाला । उनके ऐसा करने से बिजली की सप्लाई अनुमानित समय से पहले शुरू की जा सकी ।

इसके बाद टेलीग्राफिस्ट संदल को तुंगभद्रा डैम की ऊपरी नहर के नाली दरवाजे हटाने का काम दिया गया । नहर में 3 से 4 फुट तक ऊंची लहरों के कारण कार्य बहुत कठिन था । लेकिन खतरों की परवाह न करते हुए टेलीग्राफिस्ट संदल ने दृढ़ निश्चय के साथ काम पूरा किया । एक दरवाजे को हटाने में औसतन चार दिन लगते हैं लेकिन उनकी हिम्मत के कारण एक दिन में एक दरवाजे के हिसाब से सब दरवाजे हटाए जा सके ।

इन गोताखोर कार्रवाहियों में टेलीग्राफिस्ट मदन गोपाल संदल ने नौसेना की सर्वोच्च परम्पराओं के अनुकूल अपनी कर्त्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया ।

सं० 24-प्रेज़/66—राष्ट्रपति निम्नांकित व्यक्ति को पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रिया में वीरता के लिए "वीर चक्र' प्रदान करने का अनुमोदन करते हैं:—

स्क्वाड्रन लीडर इन्दर जीत सिंह परमार (4835), जनरल ड्यूटीज़ (पायलट)

पुरस्कार की प्रभावी तिथि 14 सितम्बर 1965

पाकिस्तान के विरुद्ध लड़ाई में स्क्वाड्रन लीडर इन्दर जीत सिंह परमार ने सोलह संक्रियात्मक उड़ानें कीं । इनमें से सात उड़ाने काफी नीची थीं और शत्रु के जमाव क्षेत्रों पर टोह के लिए की गई थीं । इन उड़ानों को पूरा करते समय, उन्हें अपना हवाई जहाज पूरी उड़ान-परिधि तक उड़ाना पड़ा और अक्सर शत्रु की विमान-भेदी तोपों और मझोली मशीन गनों की गोलीबारी का सामना करना पड़ा । इनमें से एक उड़ान के दौरान उन्होंने जमीन पर खड़े शत्रु के एक हैली कोप्टर को भारी क्षति पहुंचायी । उन्होंने रात में नौ हवाई गश्तें भी कीं । 14 सितम्बर 1965 की रात को उन्होंने लगातार चार लड़ाकू उड़ाने कीं, हालांकि तीसरे पहर ही वे एक सामरिक टोह उड़ान कर चुके थे । अकेले ही उन्होंने सफलता से शत्रु के बममारों को रोका और हमारे हवाई अड्डे तथा महत्वपूर्ण राडार संयत्रों पर बमबारी करने के शत्रु के इरादों को नाकाम बना दिया । दो बार उन्होंने शत्रु के बममारों को उनके बम गिराने से पहले ही पीछा करके भगा दिया ।

इन कार्यवाहियों में स्क्वाड्रन लीडर इन्दर जीत सिंह परमार ने प्रशंसनीय साहस और अद्वितीय उड़ान-कुशलता का परिचय दिया ।

सं० 25-प्रेज़/66—राष्ट्रपति जी निम्नांकित व्यक्तियों को वीरता के लिए अशोक चक्र 'तृतीय श्रेणी' प्रदान करने का अनुमोदन करते हैं:—

1. लेफ्टिनेन्ट श्यामरतन वर्मा आई० एन० ।

पुरस्कार की प्रभावी तिथि 14 फरवरी 1965

14 फरवरी 1965 को गोआ हवाई अड्डे पर, नौसेना के सीहाक विमान में सवार लेफ्टिनेन्ट श्यामरतन वर्मा विमान को डेक पर उतारने का नकली-अभ्यास कर रहे थे । तभी विमान के पिछले हिस्से में आग लग गई और विमान में विस्फोट हो गया । इसके साथ ही, विमान के नियन्त्रण करने के यन्त्र बहुत भारी हो गए और हवाई अड्डे के साथ विमान का सम्बन्ध टूट गया । विमान के आकाश में ही फटने या टूट कर गिर जाने का खतरा पैदा हो गया था । इस खतरे को जान कर भी, लेफ्टिनेन्ट वर्मा ने विमान नहीं छोड़ा । ठंडे दिमाग और महान कुशलता से वह विमान को हवाई अड्डे पर सही सलामत उतार लाए ।

2. 16635 फ्लाइट सार्जेन्ट वासुदेवन पल्लवराम, फिटर/आर्मरर ।

पुरस्कार की प्रभावी तिथि 15 सितम्बर 1965

15-16 सितम्बर 1965 की रात को एक हवाई अड्डे के धावन-पथ पर दो विमानों की दुर्घटना हो गई । इन विमानों की बम-कक्षिकाओं में फ्यूज-लगे बम लदे थे जिससे एक विमान में आग लग गई । इसके कारण कुछ बम फट गए, दूसरे धमाके के झटकों से बिखर गए और एक बम एक विमान के पंख में बहुत ही खतरनाक अवस्था में जा टिका । बिखरे हुए बम धावन-पथ के किनारे पर जा पड़े थे और जलते हुए सामान की गर्मी पहुंचने से, इनमें से एक बम बहुत ही खतरनाक हो चुका था । प्रायः ऐसी स्थिति में बमों को वहीं नष्ट कर दिया जाता है किन्तु अगर इस मामले में बम को वहीं नष्ट किया जाता तो बहुत अधिक हानि होती थी ।

खतरे की परवाह किए बिना, फ्लाइट सार्जेन्ट वासुदेवन पल्लवराम ने अपने आप आगे बढ़ कर बमों को सुरक्षित करने का काम संभाला और सफलतापूर्वक पूरा भी कर दिया । इसके बाद, उन्होंने विमान के पंख में टिके बम को भी वहां से हटा कर उसका फ्यूज निकाल दिया और उसे हानि रहित कर दिया ।

फ्लाइट सार्जेन्ट वासुदेवन ने, अपनी जान को भारी खतरे में डाल कर, अपनी इच्छा से एक खतरनाक काम खूबी से कर दिखाया । इस प्रकार उन्होंने विवेकपूर्ण उत्साह और कर्त्तव्य-निष्ठा का प्रदर्शन कर अपने सहयोगी वायुसैनिकों के लिए एक आदर्श उपस्थित किया ।

3. 48963 फ्लाइट सार्जेन्ट लिंगा राघवैया, फिटर/आर्मरर ।

परस्कार की प्रभावी तिथि 15 सितम्बर 1965

15-16 सितम्बर, 1965 की रात को एक हवाई अड्डे पर दो हवाई जहाजों की धावन-पथ पर ही दुर्घटना हो गई । उनकी बम-कक्षिका में फ्यूज़-लगे बम भरे हुए थे । दुर्घटना से एक हवाई जहाज में आग लग गई । कुछ बम फट गए और विस्फोट के धक्के से दूसरे बम बिखर गए । जिनमें से एक बम एक हवाई जहाज के विंग में जा कर खतरनाक तरीके से अड़ गया । बिखरे हुए बम धावन-पथ के किनारे-किनारे पड़े थे । इनमें से एक बम, जलते हुए हवाई जहाज की गर्मी से, फटने की खतरनाक स्थिति तक पहुंच चुका था । प्रायः इस स्थिति में बम को उसी जगह नष्ट कर दिया जाता है । लेकिन ऐसा करने से बहुत अधिक क्षति होती ।

खतरे की परवाह किए बिना फ्लाइट सार्जेन्ट लिंगा राघवैया ने बमों को सुरक्षित करने का काम स्वेच्छा से अपने हाथ में लिया और सफलता से पूरा किया । इसके बाद उन्होंने हवाई जहाज के विंग में फंसे बम को भी निकाला और उसका फ्यूज निकाल कर उसे हानि रहित कर दिया ।

ऐसे खतरनाक कार्य को सफलता से पूरा करने और अपनी जान को बड़े खतरे में डाल कर स्वेच्छा से काम सम्भालने में

फ्लाइट सार्जेन्ट लिंगा राघवैया ने संयमित साहस और कर्त्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया और अपने साथी वायुसैनिकों के समक्ष एक आदर्श प्रस्तुत किया ।

दिनांक 5 फरवरी 1966

सं० 26-प्रेज/66—दिनांक 6 नवम्बर, 1965 के भारतीय राजपत्र के भाग 1, अनुभाग 1 में प्रकाशित इस सचिवालय के दिनांक 14 अगस्त 1965 की अधिसूचना सं० 88-प्रेज/65 के वाचन-पत्र के स्थान पर निम्न वाचन-पत्र साधारण सूचनार्थ पुनः प्रकाशित किया जाता है:—

"अप्रैल, 1965 में कछ के रन में भारत-पाकिस्तान सीमा पर पाकिस्तान के भारी आक्रमण के समय श्री भाऊसाहेब शिवाजीराव शिर्के छाद बेट में राज्य आरक्षित पुलिस की एक गैरिसन की कमांड कर रहे थे । जब सरदार पुलिस चौकी पर हमला हुआ, तब शत्रु की छाद बेट के सामने एक भारी सेना एकत्रित थी । इस इलाके की कोशिशों और संख्या में बहुत अधिक और भारी हथियारों से लैस शत्रु की परवाह न करते हुए श्री शिर्के ने उस समय तक सीमा पर कामयाबी के साथ गश्त लगाना जारी रखा जब तक कि 21 अप्रैल 1965 को शत्रु ने हनुमान तलइ पर स्थित चौकी पर गोलाबारी नहीं की । 23 और 24 अप्रैल को शत्रु के तोपखाने ने छाद बेट की चौकी पर मशीनगनों तथा 3 इंच मार्टरों से गोले बरसाने शुरू कर दिए । पाकिस्तानी सेना छाद बेट चौकी की घेराबन्दी से 1200 गज दूर तक आगे आ गई किन्तु श्री शिर्के के योग्य नेतृत्व में पुलिस दल ने शत्रु की सेना को बलपूर्वक उलझाए रखा और 3 घंटे चलने वाली एक भयंकर लड़ाई के बाद उनके केन्द्रित हमले को पछाड़ दिया ।

इस मुठभेड़ में श्री भाऊसाहेब शिवाजीराव शिर्के ने उत्कृष्ट वीरता, उदाहरणीय साहस, नेतृत्व तथा उच्च स्तर की कर्त्तव्य-परायणता का परिचय दिया ।"

वाई० डी० गण्डेविया, राष्ट्रपति के सचिव

मंत्रिमंडल सचिवालय

(सांख्यिकी विभाग)

नई दिल्ली, दिनांक 1 फरवरी 1966

सं० 8/3/65-सिब्बंदी-II—भारत सरकार ने श्रम तथा रोजगार मंत्रालय द्वारा सन् 1954 में गठित 'निर्वाह व्यय सूचकांक सम्बन्धी तकनीकी सलाहकार समिति' की सदस्य संख्या तथा कार्यों में वृद्धि कर दी है और "कीमतें तथा निर्वाह व्यय आंकड़ा सम्बन्धी तकनीकी सलाहकार समिति" नाम से उसका पुनर्गठन किया है जिसके सदस्य निम्नलिखित हैं :—

1. निदेशक, केन्द्रीय सांख्यिकीय संगठन — अध्यक्ष
2. रोजगार, श्रम एवं सामाजिक आयोजन सलाहकार, योजना आयोग । — सदस्य
3. आर्थिक एवं सांख्यिकीय सलाहकार, खाद्य तथा कृषि मंत्रालय । — सदस्य
4. आर्थिक सलाहकार, वित्त मंत्रालय, आर्थिक कार्य विभाग । — सदस्य
5. आर्थिक सलाहकार, उद्योग तथा संभरण मंत्रालय — सदस्य
6. आर्थिक सलाहकार, योजना आयोग — सदस्य
7. मुख्य निदेशक, राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण सांख्यिकीय विभाग । — सदस्य
8. निदेशक, श्रम कार्यालय, श्रम तथा रोजगार मंत्रालय — सदस्य
9. उप सांख्यिकीय सलाहकार, रिजर्व बैंक आफ इंडिया, बम्बई । — सदस्य
10. निदेशक, राज्य सांख्यिकीय कार्यालय, पश्चिम बंगाल सरकार, कलकत्ता । — सदस्य
11. आंकड़ा निदेशक, मद्रास सरकार, मद्रास — सदस्य
12. अर्थशास्त्र तथा आंकड़ा निदेशक, राजस्थान सरकार, जयपुर । — सदस्य
13. अध्यक्ष, राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण डिजाइन तथा मूल्यांकन भारतीय सांख्यिकीय संस्थान, कलकत्ता । — सदस्य

2. राज्यों के प्रतिनिधियों का कार्य काल दो वर्ष का होगा ।

3. पुनर्गठित समिति के कार्य निम्नलिखित होंगे :—

(क) केन्द्रीय सरकार अथवा राज्य सरकारों द्वारा परिवार बजट सम्बन्धी पूछताछ के काम को करने से सम्बन्धित प्रस्तावों की जांच (समीक्षा);

(ख) निर्वाह व्यय सूचकांकों को तैयार करने के लिए केन्द्रीय सरकार अथवा राज्य सरकारों द्वारा बनाई गई योजनाओं की जांच ;

(ग) केन्द्रीय सरकार अथवा राज्य सरकारों द्वारा निर्वाह व्यय सूचकांकों के संकलित करने के बारे में विशेष कठिनाइयों की जांच;

(घ) निर्वाह व्यय सूचकांक जिसमें परिभाषाओं तथा प्रत्ययों आदि का मानकीकरण भी सम्मिलित है, तथा कीमत संग्रह तथा सूचकांकों की प्रणाली में मौलिक सुधार ;

(च) अखिल भारतीय भारित निर्वाह व्यय सूचकांक के संकलन सम्बन्धी विशेष समस्याओं पर विचार;

(छ) निर्वाह व्यय सूचकांकों के संकलन अथवा प्रकाशन सम्बन्धी किसी अन्य विषय पर विचार;

(ज) थोक कीमत सूचकांक के संकलन, रचना, तथा प्रकाशन सम्बन्धी विषयों पर तकनीकी सलाह देना;

4. समिति को सचिवालयीय सहायता केन्द्रीय सांख्यिकीय संगठन देगा ।

एम० बालकृष्ण मेनन, उप-सचिव

योजना आयोग

तकनीकल परामर्श सेवाओं सम्बन्धी समिति

संकल्प

नई दिल्ली, दिनांक 9 फरवरी 1966

सं० उ० व ख० 4(9)2/66—चतुर्थ पंचवर्षीय अवधि के दौरान तथा उत्तरवर्ती वर्षों में देश की औद्योगिक विकास की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए, पर्याप्त इंजीनियरी डिजाइन और परामर्श सेवायें स्थापित करने के सम्बन्ध में, योजना आयोग ने एक समिति गठित करने का निर्णय किया है। यह समिति :—

(क) इस प्रकार की परामर्श सेवाओं की आवश्यकता का अध्ययन करेगी ; और

(ख) अपेक्षित संगठक उनके विकास को प्रोत्साहित करने के लिए उपयुक्त उपायों की सिफारिश करेगी ।

2. समिति का गठन निम्न प्रकार से होगा :—

(1) श्री एस० जी० बर्वे
सदस्य (उद्योग),
योजना आयोग, नई दिल्ली — अध्यक्ष

(2) डा० ए० नागाराजा राव,
सलाहकार (उद्योग व खनिज),
योजना आयोग, नई दिल्ली । — सदस्य

(3) श्री के० एल० धयो,
विशेष सचिव, समन्वय प्रभाग,
वित्त मन्त्रालय, नई दिल्ली — सदस्य

(4) श्री के० बी० राव,
विशेष कार्य अधिकारी,
उद्योग मंत्रालय, नई दिल्ली — सदस्य

(5) श्री पी० सी० कपूर,
तकनीकी विकास के महानिदेशक,
सम्भरण तथा तकनीकी विकास मंत्रालय,
नई दिल्ली — सदस्य

(6) श्री जी० जानकी राम,
प्रमुख डिजाइन इन्जीनियर,
भारी मशीन निर्माण एकक,
भारी इंजीनियर निगम, रांची — सदस्य

(7) श्री आर० पी० सिन्हा,
प्रमुख इंजीनियर,
केन्द्रीय इंजीनियरी और डिजाइन ब्यूरो,
हिन्दुस्तान स्टील लिमिटेड, रांची — सदस्य

(8) डा० के० आर० चक्रवर्ती,
मुख्य प्रबन्धक, योजना और विकास विभाग,
भारत का उर्वरक निगम, सिन्द्री — सदस्य

(9) डा० के० एस० चारी,
केन्द्रीय डिजाइन और इंजीनियरी एकक,
वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिषद्,
नई दिल्ली — सदस्य

(10) श्री हरिभूषण,
निदेशक (इंजीनियरी),
योजना आयोग, नई दिल्ली — सदस्य-सचिव

3. समिति के विचारणीय विषय निम्न प्रकार है :—

(1) चौथी योजना के दौरान तथा उत्तरवर्ती वर्षों में देश में किस सीमा तक तथा किस प्रकार की परामर्श सेवाओं की आवश्यक पड़ेगी उसका अनुमान लगाना ;

(2) किस सीमा तक देश में सरकारी तथा निजी क्षेत्रों में, वर्तमान सुविधायें विद्यमान हैं उनका अनुमान लगाना, और जिन कमियों को पूरा किया जाना है उनका पता लगाना,

(3) इन कमियों को पूरा करने के लिए जो उपाय अपनाए जाने हैं उनके बारे में सलाह देना,

(4) तकनीकल परामर्श स्थापना के लिए जो सामान्य किस्म की संघटनात्मक प्रणालियां हमारी स्थिति के अनुकूल उपयुक्त होगी उनके बारे में सुझाव देना, और

(5) देश में अपेक्षित सीमातक तकनीकल परामर्श सेवायें स्थापित करने के लिए शीघ्र उपयुक्त उपाय करने के लिए सिफारिश करना।

4. समिति का मुख्यालय नई दिल्ली में होगा। परन्तु समिति उन स्थानों का दौरा कर सकेगी जिन्हें वह अपने कार्य के लिए उपयक्त समझे।

5. आशा है समिति छ महीने के अन्दर अपना प्रतिवेदन प्रस्तुत कर देगी।

आदेश

आदेश दिया जाता है कि इस संकल्प की एक प्रति भारत सरकार के सभी मंत्रालयों तथा सम्बन्धित व्यक्तियों को भेज दी जाय।

आदेश दिया जाता है कि संकल्प को भारत सरकार के राजपत्र में सर्वसाधारण की सूचना के लिए प्रकाशित किया जाए।

एम० बट्टु, संयुक्त सचिव

समाज कल्याण विभाग

नई दिल्ली-1, दिनांक 5 फरवरी 1966

सं० एफ० 1-100/65 एस० डब्ल्यू 3—केन्द्रीय समाज कल्याण बोर्ड का पुनर्गठन 3 वर्ष की कालावधि के लिए किया गया था, देखिए शिक्षा मंत्रालय की तारीख 7 फरवरी, 1963 की अधिसूचना संख्या एफ० 1-20/62 एस०डब्ल्य-3 :। इसलिए पुनर्गठित बोर्ड की कालावधि 6 फरवरी 1966 से समाप्त होती है। इसका अगला पुनर्गठन लम्बित रहने तक भारत सरकार बोर्ड की, जैसा कि वह इस अधिसूचना के जारी होने की तारीख पर गठित था, अवधि एक महीने के लिए अर्थात् 6 मार्च 1966 तक बढ़ाए जाने की सहर्ष घोषणा करती है।

वेद प्रकाश अग्निहोत्री, उप-सचिव

परिवहन और विमानन मंत्रालय

परिवहन नौचालन और पर्यटन विभाग

(परिवहन पक्ष)

संस्तव

पत्तन

नई दिल्ली, दिनांक 3 फरवरी 1966

सं० 13-पी० जी० (90)/65—भारत सरकार को मदरास पत्तन की 1964-65 की प्रकाशन रिपोर्ट प्राप्त हो गई है। रिपोर्ट के उल्लेखनीय तथ्य नीचे दिये जा रहे हैं :—

1—वित्तीय स्थिति

विचाराधीन वर्ष में इस पत्तन ट्रस्ट को 444.77 लाख रुपये की राजस्व आय हुई। इसके विपरीत गत वर्ष यह आय 436.63 लाख रुपये थी।

ऋण राशि को मिलाकर इस वर्ष 376.85 लाख रुपये खर्च हुये। इसके विपरीत गत वर्ष 307.41 लाख रुपये खर्च हुये थे। व्यय में वृद्धि सामान्य खर्चे और जल गोदी खर्च के अंतर्गत हुई।

विचाराधीन वर्ष में पत्तन ट्रस्ट ने पूंजी खाते में 130 लाख रुपये और पुनः नवीनकरण तथा पुनः पूंजीयन निधि में 33.13 लाख रुपये और सामान्य बीमा निधि में 1 लाख रुपया का अंशदान दिया।

कनिहार निधि में आय और व्यय क्रमशः 10.06 लाख और 11.60 लाख रुपये हुआ। व्यय में राजस्व खाते में रखी गयी 4 लाख रुपये की राशि भी शामिल है।

विचाराधीन वर्ष के अंत में विभिन्न आरक्षित निधियों में कुल 2.83 करोड़ रुपया शेष था। इसके अलावा राजस्व और कनिहारी खाते में 74.34 लाख रुपये का इतिशेष था।

बाकी ऋण

(1) विचाराधीन वर्ष के अंत में भारत सरकार का कुल 4.67 करोड़ रुपये का ऋण बाकी था।

(2) इस वर्ष के दौरान में पुननिर्माण और विकास के अंतर्राष्ट्रीय बैंक से 49 लाख रुपये की राशि निकाली गयी और इस प्रकार बैंक द्वारा अनुमोदित 6.67 करोड़ रुपये की ऋण राशि में से 31 मार्च, 1965 तक कुल मिलाकर 4.43 करोड़ रुपये निकाले गये हैं।

2—यातायात

विचाराधीन वर्ष में इस पत्तन से हुये व्यापार में सामान्य वृद्धि रही। इस वर्ष इस पत्तन से 2992865 और 1405283 टन माल का क्रमशः आयात और निर्यात हुआ। पिछले वर्ष आयात और निर्यात की ये संख्यायें क्रमशः 2588757 टन और 1577005 टन थी। आयात में वृद्धि सरकार द्वारा अधिक खाद्यान्न आयात करने से हुई। निर्यात में कमी मुख्यतः मैंगानीज धातुक, मूंगफली के तेल, सीरा और चीनी में हुई।

1964-65 में 1197141 टन का तटीय व्यापार हुआ। गत वर्ष यह राशि 1172409 टन थी। 1963-64 के 2993353 टन विदेशी व्यापार की अपेक्षा 1964-65 में यह बढ़कर 3201007 टन हुआ।

3—नौवहन

विचाराधीन वर्ष में पालपोतों को छोड़कर इस पत्तन पर 1343 जहाज़ आये। इसके विपरीत गत वर्ष 1289 जहाज़ आये थे। गत वर्ष के 5246798 टन भार के विपरीत इस वर्ष टन भार 5463647 था। इस वर्ष 285 टन भार के दो पालपोत इस पत्तन पर आये। इसके विपरीत गत वर्ष 564 टन भार के चार पालपोत आये थे।

विचाराधीन वर्ष में 94181 यात्रियों ने पत्तन का प्रयोग किया। इसके विपरीत गत वर्ष 61211 यात्री आये थे।

4—श्रमिक

इस वर्ष के दौरान श्रमिकों सम्बन्धी स्थिति संतोषजनक रही। श्रमिक-कल्याण उपायों पर विशेष ध्यान दिया जा रहा।

5—निर्माण कार्य

(1) जलीय गोदी की बगल की दीवारों का निर्माण पूरा हो गया। मार्च, 1965 तक कुल 286.86 लाख रुपया खर्च हुआ।

(2) जलीय गोदी को 31 फीट तक गहरा करने का काम पूरा हो गया है और छहों गोदियों को जहाज़ नौवहन के लिये चालू कर दिया गया है।

(3) विचाराधीन वर्ष में 3 टन वाली सात क्रेनें प्राप्त हुई हैं। 5 टन वाली दो क्रेनें जोड़ी तथा लगाई जा रही हैं। 10 टन वाली एक क्रेन परीक्षण के लिये तैयार थी।

(4) साउथ की-1 का पुनर्निर्माण जारी था।

(5) 23.60 लाख रुपये की अनुमानित लागत पर दोमंजिली ट्रांज़िट शेड बनाने का काम जारी था।

(6) बोट बेसिन का ढांचा बदलने का काम जारी था।

(7) रोयापुरम् खाड़ी की भूमि का सुधार कार्य पूरा हो गया है।

(8) किल पौक से पत्तन तक पृथक पानी की नालियां बिछाने का काम जारी था और लगभग 90 प्रतिशत कार्य समाप्त हो गया है।

6—विविध

माल के ढुलान के लिये कामगरों की उपस्थिति अति आवश्यक है अतः बोर्ड ने कामगरों की अच्छी उपस्थिति के लिये प्रोत्साहन योजना लागू की। तीसरी पारी को स्थायी तौर पर जारी रखा गया है।

सराहना

पत्तन ट्रस्ट बोर्ड ने उपयोगी कार्य करते हुये एक और वर्ष व्यतीत किया और सरकार विचाराधीन वर्ष में बोर्ड द्वारा किये गये काम की सराहना करती है।

सं० 8-पी० जी० (148)/65—भारत सरकार को बंबई पत्तन की 1964-65 की प्रशासन रिपोर्ट प्राप्त हो गयी है। रिपोर्ट के उल्लेखनीय तथ्य नीचे दिये जा रहे हैं :—

2. **वित्तीय स्थिति :** विचाराधीन वर्ष में पोर्ट ट्रस्ट को कुल राजस्व आय 1739.81 लाख रुपये हुई इसके विपरीत 1963-64 में 1633.73 लाख रुपये आय हुई थी। 1964-65 में कुल व्यय 1593.71 लाख रुपये हुआ इसके विपरीत गत वर्ष 1483.02 लाख रुपये व्यय हुये थे। इस प्रकार 1964-65 में 146.10 लाख रुपया अधिशेष रहा जब कि 1963-64 में अधिशेष 150.71 लाख रुपये था। आय में उल्लेखनीय वृद्धि होने का मुख्य कारण यह था कि घाट शुल्क और विलम्ब शुल्क के और किराये के कुछ पिछले मामलों के समझौते से अधिक आय हुई। व्यय में वृद्धि मुख्यतः इन मदों में हुई—सामान्य देयतायें और जलीय डाक और रेल विभाग। इसका कारण पत्तन कर्मचारियों को दिये गये महंगाई भत्ते में वृद्धि और उन्हें अंतरिम सहायता देना था।

1964-65 के अंत में पत्तन ट्रस्ट की आरक्षित निधियों में कुल शेष 34.45 करोड़ रुपया था। 16.05 करोड़ रुपये की शेष ऋण राशि में से 6.18 करोड़ रुपये जनता का है और 8.75 करोड़ रुपये सरकार का और शेष 1.12 करोड़ रुपये आंतरिक ऋण है जो स्वयं ट्रस्टियों का है। ऋणों के भुगतान के लिये ट्रस्टियों द्वारा जनरल सिंकिंग फंड में जमा किये गये धन की राशि 6.27 करोड़ रुपये हो गयी है और मेरीन आइल टरमिनल के लिये सरकार से लिये गये ऋण के भुगतान के लिये निलम्बन लेखे में 3.57 करोड़ रुपये जमा हो गये हैं।

3. **यातायात :** इस पत्तन पर 1964-65 में 17345000 टन भार माल लादा-उतारा गया। इस में से 12133000 टन आयात किया हुआ और 5212000 टन निर्यात किया गया माल था। गत वर्ष 11885000 टन और 5464000 टन माल क्रमशः आयात और निर्यात किया गया था जो मिलाकर कुल 17349000 टन होता है।

1964-65 में समुद्रपार के 129535 यात्रियों ने और 748134 तटीय यात्रियों ने इस पत्तन का प्रयोग किया।

4. **नौवहन :** 1964-65 में 220.4 लाख रजिस्टर्ड टन धारिता के 3135 जहाज़ इस पत्तन पर आये। इसके विपरीत 1963-64 में 225.6 लाख रजिस्टर्ड टन धारिता के 3276 जहाज़ आये थे। इस वर्ष इस पत्तन पर आने वाले जहाज़ों में सबसे बड़ा जहाज़ एस० एस० "मोबिल डेलाइट" था जो कुल 58153 टन धारिता का था।

1964-65 में इस पत्तन का प्रयोग 32055 पालपोतों ने किया। इसके विपरीत 1963-64 में 38027 पालपोतों ने इसका प्रयोग किया था।

1964-65 में 110 जहाज़ों ने सूखी गोदियों का प्रयोग किया और जलीय गोदियों में मरम्मत के लिये 174 जहाज़ आये जिनमें एलेक्जेंड्रा डाक में आने वाले 29 जहाज़ भी शामिल हैं।

5. **निर्माणकार्य :** 1964-65 में जिन निर्माण कार्यों पर धन व्यय किया गया उन में से महत्वपूर्ण कार्य नीचे दिये जा रहे हैं :—

निर्माण कार्य का नाम	व्यय-राशि लाख रुपयों में
(1)	(2)
(1) डाक विस्तार योजना (1962)	35.32
(2) बूचर द्वीप योजना	11.13
(3) मुख्य हारबर जलमार्ग का निकर्षण मुख्य योजना-क्रम 1 और 2	6.45
(4) बंबई पत्तन की मास्टर योजना की तैयारी	6.24
(5) एफ० सी० सारुस के स्थान में 125 टन तिरती क्रेन 'श्रावन' की खरीद	5.68
(6) प्रशासनिक कार्यालय भवन का विस्तार	9.10
(7) पत्तन ट्रस्ट कर्मचारियों के लिये अस्पताल का निर्माण	6.55
(8) अन्तोप गांव में अनियत कर्मचारियों के लिये क्वाटरों का निर्माण	6.78
(9) 54 एलेक्ट्रिक हार्फ क्रेनों की खरीद तथा एलेक्जेंड्रा डाक में उन्हें लगाना	33.20

(1)	(2)
(10) एलेक्जेंड्रा डाक में इंट्रेंस लाक के ऊपर के मौजूदा रिम व स्कूल पुल के स्थान में नये पुल का निर्माण . . .	13.80
(11) रेल की पटरी और स्लीपरों का नवीनीकरण	11.75

6. **पत्तन ट्रस्ट रेलवे :** स्थानीय यातायात में प्रशंसनीय वृद्धि हुई । 1963-64 और 1964-65 की वेगनों और टनों के रूप में तुलनात्मक संख्यायें नीचे दी जा रही हैं :—

	वगन		टन
	आनेवाले	जानेवाले	
1963-64	9335	15764	319000
1964-65	14584	22890	432000

जैसा नीचे दी गयी सारणी से ज्ञात होगा ट्रंक यातायात में 1963-64 की अपेक्षा कमी हुई :—

	वेगन		
	आनेवाले	जानेवाले	टन
1963-64	113408	143738	4626700
1964-65	111979	143055	4482100

ट्रस्टियों द्वारा अनुमोदित पुनरीक्षित तरीके से हिसाब लगाने से बंबई पत्तन ट्रस्ट रेलवे के 1963-64 और 1964-65 के परिणाम नीचे दिये जा रहे हैं :—

	आय	व्यय	अधिशेष (+) घाटा (—)
	(लाख रुपये)	(लाख रुपये)	(लाख रुपये)
1963-64	130.93	154.80	(—) 23.87
1964-65	129.01	167.86	(—) 38.85

1964-65 में रेल कार्य चालन में और अधिक घाटा होने का कारण यह है कि आय में कुछ कमी रही और महंगाई भत्ते की दर में वृद्धि होने के परिणामस्वरूप सिब्बंदी में खर्च अधिक हुआ ।

जहाजों का विराम काल और माल लादने व उतारने की गति

1964-65 में डाकों पर आने वाले जहाजों की सबसे बड़ी संख्या 100 थी और ये 31 मार्च 1965 को समाप्त होने वाले पखवाड़े में आये थे । इस पखवाड़े में औसत विराम काल 4.1 दिन था । इसके विपरीत 30 सितम्बर 1964 को समाप्त हुए पखवाड़े में, जब 66 जहाजों ने डाक का प्रयोग किया था, सबसे कम विराम काल 6 दिन था ।

1964-65 में 1000 या उससे अधिक माल वाले जहाजों से माल उतारने और लादने की सबसे तेज गति नीचे दी जा रही है :—

(टनों में)

	विराम काल की सबसे तीव्र औसत दैनिक गति	
	1963-64	1964-65
माल उतारना (आयात) .	2640	3279
माल लादना (निर्यात) .	1680	2662

1964-65 में "पीस रेट" योजना के अन्तर्गत लादा-उतारा गया माल डेटम (माप-तौल) से 125 प्रतिशत अधिक था ।

8. **श्रमिक :** विचाराधीन वर्ष में पत्तन श्रमिकों द्वारा कुछ हड़तालें की गईं ।

पत्तन ट्रस्ट के कल्याणकारी उपाय इन क्षेत्रों में किये गये, खेल-कूद, मनोरंजन, विविध आमोद-प्रमोद, सैर छात्रवृत्तियां, कैंटीनें, सामान्य चिकित्सा, महिला निदान गृह, वाचनालय और पुस्तकालय इत्यादि ।

9. **अमला :** 1964-65 में अमला पर कुल खर्च 835.12 लाख रुपये हुआ । इसके विपरीत गत वर्ष 731.02 लाख रुपया खर्च हुआ था । 1963-64 के मुकाबले 1964-65 में 104.10 लाख रुपया अधिक खर्च होने का कारण यह था कि विचाराधीन वर्ष में तृतीय श्रेणी और चतुर्थ श्रेणी कर्मचारियों को भुगतान किये जाने वाले महंगाई भत्ते में दो बार वृद्धि की गई । खर्च में वृद्धि होने के अन्य कारण यह थे—नियमित और अनियमित सिब्बन्दी में अतिरिक्त अमला नियुक्त करने के कारण वेतन, मजदूरी और भत्ते में वृद्धि और वेतन क्रमों के पुनरीक्षण के कारण बकाया का और समयोपरि भत्ते का अधिक भुगतान ।

1964-65 में चिकित्सा पर कुल 8.86 लाख रुपया खर्च हुआ इसके विपरीत गत वर्ष 6.88 लाख रुपया खर्च हुआ था ।

10. पत्तन ट्रस्ट बोर्ड ने दूसरा उपयोगी वर्ष बिताया और भारत सरकार उसके कार्य की सराहना करती है ।

संस्ताव

दिनांक 7 फरवरी 1966

सं० 21-टी० (42)/64—श्री एस० एम० भट्टाचार्य, सचिव, पश्चिम बंगाल सरकार गृह (परिवहन) विभाग, को श्री एस० मलिक के स्थान पर सड़क परिवहन कराधान जांच समिति का सदस्य नामित किया जाता है, जो इस मंत्रालय के संस्ताव संख्या 21-टी० (42)/64, दिनांक 6 सितम्बर 1965 के अनुसार स्थापित की गई थी ।

आदेश

आदेशित किया जाता है कि इस संस्ताव की एक प्रतिलिपि समस्त संबद्ध को प्रेषित कर दी जाये और वह सामान्य सूचना के लिये भारत के राजपत्र में प्रकाशित कर दिया जाये ।

संस्ताव

सं० 1-टी(150)/64—इस मंत्रालय की संस्ताव संख्या 1-टी (150)/64, दिनांक 27 मई 1965 द्वारा श्री सी० सुन्दरा-मूर्ति के स्थान पर श्री वी० शंकरन, संयुक्त परिवहन कमिश्नर, मद्रास को नियुक्त की गई जोवश्म इकाइयों के अध्ययन दल में कार्य करने के लिए नामित किया जाता है ।

आदेश

आदेश दिया जाता है कि इस संस्ताव की एक प्रति समस्त संबद्ध को भेज दी जाए और सामान्य सूचना के लिए इसे भारत के राजपत्र में प्रकाशित कर दिया जाये ।

नरेन्द्र पाल माथुर, संयुक्त सचिव

PRESIDENT'S SECRETARIAT

New Delhi, the 26th January 1966

No. 18-*Pres.*/66.—The President is pleased to approve the award of the "VISHISHT SEVA MEDAL"/"DISTINGUISHED SERVICE MEDAL", *CLASS I*, to the undermentioned personnel for distinguished service of the most exceptional order :—

Lieutenant General MOTI SAGAR (IC-25).

Major General AMRIK SINGH, M.C. (IC-133).

Major General RAJINDER NATH BATRA (IC-446).

Rear Admiral BENJAMIN ABRAHAM SAMSON.

Rear Admiral SARDARILAL MATHRADAS NANDA.

Brigadier IORWERTH GEORGE JENKINS, M.C. (IC-389).

Brigadier ZORA SINGH (IC-3287).

Brigadier ONKAR SINGH KALKAT (IC-810).

Air Commodore KRISHNA MAHESH AGERWALA (1648), GD(N).

No. 19-*Pres*/66.—The President is pleased to approve the award of the "VISHISHT SEVA MEDAL"/"DISTINGUISHED SERVICE MEDAL", *CLASS II*, to the undermentioned personnel for distinguished service of an exceptional order :—

Commodore GEORGE DOUGLAS, DFC.

Air Commodore KEKI NADIRSHAH GOCAL (1764), GD(P).

Air Commodore VICTOR SRIHARI (1624), GD(P).

Group Captain BAL BHAGWAN MARATHE (1915), GD(P).

Group Captain TRILOK NATH GHADIOK, Vr.C (2354), GD(P).

Group Captain SURINDER SINGH (3009), GD(P).

Group Captain DAVID EUGENE BOUCHE (2774), GD(P).

Lieutenant INDERJIT SHARMA, IN.

No. 20-*Pres.*/66.—The President is pleased to approve the award of the "VISHISHT SEVA MEDAL"/"DISTINGUISHED SERVICE MEDAL", *CLASS III*, to the undermentioned personnel for distinguished service of a high order :—

Acting Commander PRAVIN YAGNIK, IN.

Acting Commander GANDAM ASHIRVADAM, IN.

Major PREM NARAIN KACKER (IC-7041), Gorkha Rifles.

Major MEHAR SINGH GREWAL (IC-777), Army Service Corps.

Major SUBHAS CHANDRA SARKAR (MR-925), Army Medical Corps.

Squadron Leader INDRAKANTY GOPALA KRISHNA (398), Technical Engineering.

Squadron Leader NORI SEETARAMA SASTRY (5540), Technical Engineering.

Squadron Leader DEWKI NANDAN SHARMA (3913), Technical/Armament.

Squadron Leader NIVARTHI CHITTARANJAN (5433), Technical Engineering.

Squadron Leader TINNAM NARAYAN VENKATARAMAN (5133), Technical Engineering.

Squadron Leader JAGDISH MITTAR KAUSHAL (5846), Technical Electrical.

Squadron Leader JOHN ALBERT RATNAM BALRAJ (4575), GD(P).

Squadron Leader IQBAL SINGH (5361), Technical Engineering.

Lieutenant ARVIND RAMCHANDRA DABIR, I.N.

Lieutenant NARAYANAN VAIDYANATHAN, I.N.

Flight Lieutenant KUNWAR YOGENDRA SINGH, (5514), Administrative and Special Duties.

300098 Sergeant OM PARKASH MIDHA, Fitter II, Airframe.

JC-21432 Naib Subedar DHAN BAHADUR THAPA, Gorkha Rifles.

46409 Master Warrant Officer JOHN ANTHONY GEORGE, Musician.

No. 21-*Pres* /66.—The President is pleased to approve the the award of the "SENA MEDAL"/"ARMY MEDAL" to the undermentioned personnel for acts of exceptional devotion to duty or courage :—

1. Second Lieutenant SHIVRAM SINGH THAPA (EC-54419),

2nd Bn., The Garhwal Rifles.

On the night of 21st/22nd November, 1964, 2/Lieutenant Shivram Singh Thapa, who was commanding a picquet in Jammu & Kashmir area, received information about the movement of some Pakistani intruders. He immediately took out a patrol to deal with the intruders. As the patrol approached the area, it came under intense LMG and rifle fire. He ordered his patrol to take position and moved forward with five men of his party. Despite sustained and accurate firing by the intruders from a close range, 2/Lieutenant Thapa, taking a grave personal risk, crawled forward with two of his men to within twenty five yards of one of the Pakistani LMG positions, threw grenades and neutralised it. In the meantime, two Browning machine guns from neighbouring Pakistani picquets also opened fire on the patrol. Having inflicted casualties on the intruders, 2/Lieutenant Thapa successfully brought back his party through the bullet swept area without any casualties. This action blunted hostile activities in the area.

2/Lieutenant Shivram Singh Thapa displayed courage, leadership and devotion to duty which were in the best traditions of the Indian Army.

2. JC-5918 Subedar SHANKAR SHINDE,

22nd Bn., The Maratha Light Infantry.

Subedar Shankar Shinde was commanding a group of 7 other ranks who were ordered to assault a post established by Pakistani intruders in the Tarkundi area in Jammu & Kashmir, on the night of 3rd/4th July, 1964. As the group approached the post, the intruders opened heavy machine gun fire. Undeterred by the hostile fire, Sub. Shinde led the assault group to reach the trenches of the post and threw grenades in the intruders positions. As a result, two intruders were killed and the rest ran away. He captured a .38 pistol and brought his party back safely.

On another occasion, when a raid was carried out in an area known to be visited by Pakistani patrols and armed Razakars, he led an assault group and recovered a rifle after killing one Razakar.

On both these occasions, Subedar Shankar Shinde displayed courage, devotion to duty and leadership of a high order in the best traditions of the Indian Army.

3. JC-6028 Subedar PRITAM SINGH,

5th Bn., The Sikh Light Infantry.

On the night of 31st March/1st April 1965, Subedar Pritam Singh, with 2 other Ranks, was detailed to reconnoitre a piece of ground near the cease-fire line in Jammu & Kashmir. The objective of the patrol was a small pimple. On approaching the objective, Subedar Pritam Singh deployed the two Other Ranks to protect the left and right flanks and himself crawled forward up to the objective. At about 2315 hours, he found a patrol of about 15 Pakistani intruders climbing the same pimple. Although greatly outnumbered, he decided to fight with the enemy patrol. He killed the enemy's leading scout with sten gun fire when the latter came within a distance of approximately five yards from him. He then engaged the next scout and threw two grenades at the other members of the Pakistani patrol, killing or wounding several others. The Pakistani patrol immediately took position and returned the fire with two light machine guns, rifles and sten guns. Almost simultaneously, four Pakistani medium machine guns opened intense fire. Undaunted, Subedar Pritam Singh advanced, came closer to the Pakistani patrol and captured a carbine machine sten from one of the Scouts. By this time, the two Other Ranks of his patrol also joined him.

In this action Subedar Pritam Singh displayed exemplary courage, leadership and devotion to duty in the best traditions of the Indian Army.

4. No. 3344754 Naik HARNEK SINGH,

The Sikh Regiment.

On the night of 2nd/3rd January, 1965, when Pakistani intruders, armed with rifles, shot guns and other weapons, infiltrated into Indian territory with a view to raiding one of our posts in Jammu & Kashmir and plundering the houses of local civilians, Naik Harnek Singh and his men ambushed the intruders. When the intruders came within close distance of the ambush, Naik Harnek Singh and his men charged them. In the encounter that followed, he captured one shot gun and a sabre and killed six intruders including their leader, who was a notorious Razakar.

In this action Naik Harnek Singh displayed exceptional courage, determination and leadership in the best traditions of the Indian Army.

5. No. 4141092 Naik PREM SINGH,

The Kumaon Regiment.

Naik Prem Singh was a member of a patrol which was sent on the night of 21st/22nd February, 1965, to intercept some armed Pakistani intruders, who were reported to have crossed the cease-fire line in Jammu & Kashmir. One party of the intruders was already in position and opened fire from approximately 100 yards. Thereafter another party opened fire from the flank from approximately 50 yards. Naik Prem Singh with one Sepoy charged on the intruders.

He killed one of them and the others, including the first party, ran away. He captured one rifle during the encounter.

In this action, Naik Prem Singh displayed courage and determination of a high order in the best traditions of the Indian Army.

No. 22-Pres./66.—The President is pleased to approve the award of the "VAYU SENA MEDAL"/"AIR FORCE MEDAL" to the undermentioned personnel for acts of exceptional devotion to duty or courage :—

1. Wing Commander DILBAGH SINGH (2998), General Duties (Pilot).

Wing Commander Dilbagh Singh took over command of the fighter Squadron of MIG-21 on its formation in March 1963, and in spite of the difficulties of a new unit, Wing Commander Dilbagh Singh achieved combat readiness and operational efficiency of his unit in the shortest possible time. In addition to the Squadron training, he also had to undertake the training of the newly posted Pilots. Wing Commander Dilbagh Singh has to his credit 4400 hours of accident free flying on single-engined aircraft of which about 1000 hours are on jet fighter alone, which is a very creditable achievement.

By his exceptional skill, zeal and enthusiasm, Wing Commander Dilbagh Singh converted his unit in a well-knit team of officers and airmen.

Wing Commander Dilbagh Singh displayed commendable professional skill and devotion to duty in the best traditions of the Indian Air Force.

2. Squadron Leader SATYENDRA PAL TYAGI (4757), General Duties (Pilot).

During the operations against Pakistan, Squadron Leader Satyendra Pal Tyagi, Flight Commander of an operational squadron, carried out eleven operational sorties in the Rajasthan-Sind sector, out of which six were low-level tactical missions over enemy concentrations. During these missions, he operated at the extreme limits of the aircraft's radius of action, very often under enemy anti-aircraft and light machine gun fire. On one occasion, though his aircraft was hit by anti-aircraft fire, he completed his mission successfully. He also flew combat air patrol sorties over the base during night operating under difficult conditions. Squadron Leader Satyendra Pal Tyagi displayed commendable flying skill and devotion to duty.

3. Squadron Leader RANJIT DHAWAN (4572), General Duties (Pilot).

During the operations against Pakistan, Squadron Leader Ranjit Dhawan was the flight commander of an operational squadron. He was also responsible for a group of 25 Gnat aircraft based at his station and had to look after the necessary coordination between the engineering and the operational personnel. He carried out a total of 44 operational missions in Gnat aircraft. He also was required to plan and coordinate the flying effort of all the aircraft under his command. Thanks to his leadership and planning, the Gnats were able to give a good account of themselves against Pakistani aircraft of superior performance. Although he himself did not shoot down any enemy aircraft, other operational pilots achieved success under his guidance and leadership. His cheerful disposition, zeal and keenness to hunt the enemy in the sky inspired the other pilots and the ground crew under him to put in their best efforts in the operations.

4. Flight Lieutenant SHRIKRISHNA VISHNU PHATAK (6358), General Duties (Pilot).

On 1st September 1965, Flight Lieutenant Shrikrishna Vishnu Phatak was a Wingman in a four aircraft formation. As the formation was entering the enemy area in the Chhamb sector, he saw several enemy aircraft. He reported their position and stuck to his own formation to guard his leader's rear. The formation was ordered to take evasive action and to turn hard starboard. In the process, his aircraft was fired upon by the enemy and was partially out of control; yet he stayed in his aircraft and continued to try to control it till he saw that it was in flames and the fire was spreading fast. Even then he did not lose his nerve, and tried to gain height from a very low altitude. Having failed to do so, he was forced to abandon the burning aircraft.

Soon after landing he saw some troops around him and since he was not sure of his location he evaded them till he was overpowered by a posse of armed personnel and bayonetted. The bayonet narrowly missed going through his lungs.

Throughout this encounter, Flight Lieutenant Shrikrishna Vishnu Phatak displayed presance of mind, professional skill and devotion to duty of a high order.

5. Flight Lieutenant KIZHANATHAM RAMABADRAN RAJAGOPALAN (4875), General Duties (Pilot).

Flight Lieutenant Kizhanatham Ramabadran Rajagopalan has been serving with a Transport Squadron operating in Jammu and Kashmir since 1961. He had earlier been on operational tour of the Naga Hills and NEFA area.

During his short service career, Flight Lieutenant Rajagopalan has completed a total of about 4000 hours of flying including 1300 hours in operational areas. His operational experience has been a great asset to the Squadron and on many occasions, when weather conditions were most unfavourable, he voluntarily undertook hazardous supply-dropping missions to the most isolated and remote forward posts in Ladakh. In his flights in operational areas he has shown commendable professional skill and his performance has been a source of inspiration to other members of the Squadron in the best traditions of the Indian Air Force.

6. Flying Officer NARINDER SINGH SAWHNEY (6492), General Duties (Navigator).

Flying Officer Narinder Singh Sawhney has been operating as a Navigator with a Transport Squadron in Jammu and Kashmir since October 1962. At such an early stage of his career, through sheer zeal and enthusiasm, this officer has done 1100 hours operational flying in carrying out vital missions over some of the most isolated posts in forward areas in Ladakh. He always rose to the occasion and cheerfully volunteered to participate in difficult missions, the success of which was largely due to his intimate knowledge of the area. Despite unpredictable weather and difficult flying conditions, he regularly undertook operational sorties in utter disregard of his personal safety, which has been a source of inspiration to his colleagues.

Flying Officer Narinder Singh Sawhney has displayed professional skill and devotion to duty of a high order in the best traditions of the Indian Air Force.

7. Pilot Officer SUBRAMANIA SANKARAN (7127), Technical/Armament.

During the operations against Pakistan, Pilot Officer Subramania Sankaran was recalled from leave and moved to a forward wing. He was asked to assume the responsibility of running the Daily Servicing Section at his base which housed aircraft not only from his own squadron but from other units also. The aircraft were required round the clock, starting from early morning armed patrols which had to be airborne at 0430 hours. Himself an armament officer, he went out of his way to gain a workable knowledge of the other trades and within a very short time was able to run a Daily Servicing Section in an efficient manner and to coordinate its activities in order to meet the demands from detachments in other forward bases. He was required at times to work upto 17 hours a day. For several days Pilot Officer Subramania Sankaran did not leave the Daily Servicing Section premises.

In the execution of his task Pilot Officer Subramania Sankaran displayed commendable devotion to duty, great skill and good leadership. Working against many handicaps and under difficult conditions, he set an inspiring example to all those around him.

8. 48217 Master Signaller (Air) SRI RAM VOHRA.

Master Signaller Sri Ram Vohra has been operating as senior Air Signaller with a Transport Squadron engaged in operational tasks in Jammu and Kashmir. This is his second operational assignment; he had earlier operated in this area as well as in NEFA. During one of his earlier tours, he met with a serious flying accident in Jammu and Kashmir. Undeterred by the effects of that accident, Master Signaller Vohra cheerfully volunteered for all difficult missions assigned to his Squadron, which involved hazardous flying over treacherous terrain and in adverse weather conditions. Within a period of 22 months, he had flown about 1000 operational hours. Master Signaller Vohra voluntcered for flying whenever other signallers were not available and by his own example inspired confidence in his colleagues.

Master Signaller Sri Ram Vohra has displayed devotion to duty and professional skill of a very high order in the best traditions of the Indian Air Force.

9. 210384 Signaller J-VED KUMAR SHARMA

Signaller Ved Kumar Sharma has been serving with a Transport Squadron in Jammu and Kashmir since July 1961, and has to his credit a total of 2500 hours of flying, of which over 1800 hours are on operations. Disregarding his personal safety, Signaller Sharma has volunteered for almost every difficult and hazardous supply dropping mission in remote and isolated posts in Ladakh. He flew as many as 10 hours a day and always appeared cheerful and thus inspired confidence in his colleagues.

Signaller Ved Kumar Sharma has displayed commendable devotion to duty and professional skill in the best traditions of the Indian Air Force.

No. 23-Pres./66.—The President is pleased to approve the award of the "NAO SENA MEDAL"/ "NAVY MEDAL" to the undermentioned personnel for acts of exceptional devotion to duty or courage :—

1. Commander CHERRUVASSERI VARIJAKSHAN NEDUNGADI.

On the 22nd July 1965, Commander Cherruvasseri Vaijakshan Nedungadi, who was in command of INS Dharini, was ordered to rescue the crew of a Greek Ship S. S. Mariviki, which was wrecked by rough seas about 20 miles from Goa. The Dharini is an ex-cargo vessel with very limited power and a maximum speed of only 8 knots. The weather at that time was cyclonic with heavy seas and incessant rain affecting visibility. Commander Nedungadi handled his ship with courage and skill and even though there was a serious risk of the Dharini being wrecked, he came close to the Mariviki to effect the rescue. The sea was rough and boats had to be sent out in blinding rain, strong breeze and swell. Commander Nedungadi planned and executed this operation with boldness and determination. But for his skilful handling of the Dharini and his leadership, the crew of the Mariviki might have perished.

The initiative and courage shown by this officer in a dangerous situation were in keeping with the best traditions of the Navy.

2. Lieutenant Commander VIDYA BHUSHAN.

Lieutenant Commander Vidya Bhushan was in command of INS Magar which was engaged in transporting about 1600 tons of heavy earth moving and forest clearing equipment from the mainland to the Andaman Islands. Beaching a ship the size of Magar is a difficult operation and the task was more difficult since the Magar was a very old ship.

Preliminary reconnaissance and beach surveys as to the gradients, obstructions etc. were not possible. Lieutenant Commander Bhushan rose to the occasion. Using local and improvised resources and taking calculated risks, he ensured safe and timely beachings under difficult navigational conditions.

Under Lieutenant Commander Bhushan's inspiring leadership the ship's company conducted themselves in the best traditions of the Navy and completed this difficult task without a single casualty or accident.

3. Lieutenant Commander HERBERT SOANS.

On 22nd July 1965, Lieutenant Commander Herbert Soans was the Executive Officer of INS Dharini when the ship was sent to the rescue of S. S. Mariviki which had been wrecked about 20 miles from Goa. Cyclonic weather was prevailing with a heavy sea and continuous monsoon rain.

Lieutenant Commander Soans was Officer-in-Charge of the boat which was sent from the Dharini to the wreck of S. S. Mariviki. He inspired the boat's crew to face the challenge posed by the high waves and the gale. Under his leadership they manned the oars for about four hours. Although exhausted, they continued the rescue operation until the last man from S. S. Mariviki was brought safely to INS Dharini. They made several trips in difficult conditions and rescued 27 persons.

In this operation Lieutenant Commander Herbert Soans displayed determination, leadership and devotion to duty in keeping with the best traditions of the Navy.

4. Sub-Lieutenant (SD) (TAS) ANANT RAM.

Sub-Lieutenant Anant Ram has rendered vital diving assistance at national projects and naval tasks since 1961. In September 1964, when a Piper Cub aircraft, belonging to the Bombay Flying Club, crashed while on a flight from Bombay to Ahmedabad, Sub-Lieutenant Anant Ram with a diving team was sent to search for the aircraft. In spite of a rough sea and swift current and very deep water, Sub-Lieutenant Anant Ram decided to undertake the operation and continued the search of a wide area until it was called off as it was evident that the aircraft had sunk in deep mud.

In November 1964, at the request of the Gujarat Electricity Board, Sub-Lieutenant Anant Ram worked with a diving team for the removal of a steel coffer-dam in the river Mahi which was blocking the flow of water into the pump-house of a new power station in Khaira District. The task became very difficult and risky because of the high tide, continuous silting, deep mud and complete darkness due to muddy water. Despite all these hazards Sub-Lieutenant Anant Ram led his diving team and successfully conducted the operations of cutting the coffer-dam 8 feet below the datum.

Throughout, Sub-Lieutenant Anant Ram displayed exemplary courage, professional skill and devotion to duty which were in the best traditions of the Indian Navy.

5. Petty Officer DASARI NARASINGA RAO REDDY, Engineering Mechanic, O. No : 44992.

On the 5th June 1965, when Petty Officer Dasari Narasinga Rao Reddy was on the watch tending the auxiliary boiler of INS Khukri, the boiler suddenly back-fired and the resultant flash caused a major fire. Petty Officer Reddy remained at his post, although his face and hands were burnt. Disregarding personal safety, he endeavoured to fight the flames which were rapidly spreading. He ignored the risk from the superheated steam which would have enveloped him if the boiler had burst.

Despite the burns he had suffered, Petty Officer Reddy managed single-handed to keep the fire under control until help arrived. He thus averted what might have been a major disaster.

The courage and devotion to duty displayed by Petty Officer Dasari Narasinga Rao Reddy were in the best traditions of the Navy.

6. Petty Officer (UWI) GOPALAKRISHNAN LAXMAN DASS, O. No : 33453.

Petty Officer Gopalakrishnan Laxman Dass was incharge of the Divings and Demolition Section of the Naval Garrison in the Andamans. His section was given the task of clearing coral growths and other underwater obstructions in selected sites in Port Blair harbour. While thus employed, they came up against several unexploded Japanese bombs and mines under water in an area west of Chalnam Island. There was no means of rendering these safe except removing them one by one to Minnie Bay range and exploding them.

Petty Officer Dass personally undertook this dangerous task. The bombs had deteriorated so badly that the slightest percussion could have caused a devastating explosion. However, with cool courage and relying on his knowledge of clearance of mines and bombs, Petty Officer Dass completed the operation successfully and thus removed a potential danger to the nearby dock area.

The courage and devotion to duty displayed by Petty Officer Gopalakrishnan Laxman Dass were in the best traditions of the Navy.

7. Leading Seaman ISHWAR DATT MISRA, O. No : 47445, *(Posthumous)*

Leading Seaman Ishwar Datt Misra was an experienced diver and had taken part in several diving operations. He was a member of the diving team which carried out repairs to the gates of Hirakud Dam at a depth of 70 feet between 5th May to 16th June 1964. In September 1964, he was in the diving team which recovered a submerged boat at Sonipat. He was connected with diving operations when demolition work was carried out on a submerged bridge at Basaidhara Bridge, Delhi in October 1964. He also took part in diving operations at Hirakud Dam during November-December 1964, to clear a fouled gate at Chiplima Power House. On 17th December 1964, during diving operations at Rourkela, while he was engaged in filling up a hole in a gate at a depth of 35 feet, his leg got trapped in the hole and he was unable to extricate it due to the pressure and flow of water, as a result of which he died.

Throughout, Leading Seaman Ishwar Datt Misra displayed exemplary courage, professional skill and devotion to duty in keeping with the highest traditions of the Indian Navy.

8. Able Seaman KANS RAJ, O. No : 67634.

On 22nd July 1965, Able Seaman Kans Raj was the coxswain of the whaler of INS Dharini when the ship was ordered to rescue the crew of the Greek ship S. S. Mariviki which had been driven on to the rocks and wrecked. The weather was cyclonic with a heavy sea and blinding rain. Taking a boat close to the Mariviki to rescue the crew was a hazardous operation. There was a risk of the boat being dashed against the wreck which could have resulted in the loss of the boat and of the lives of all on board. Undaunted by the danger Able Seaman Kans Raj skilfully took his boat alongside the Mariviki time and again and rescued all the 27 members of her crew.

Throughout the operation that lasted about four hours, he fought against the weather and the high sea and despite exhaustion did not relax until the last man was rescued from the wrecked ship.

The skill and courage displayed by Able Seaman Kans Raj were in keeping with the best traditions of the Navy.

9. Sub-Lieutenant T. APPUKUTTAN, INVR.

10. Leading Electrical Mechanic (Radar) DALIP SINGH BALHARA, O. No : 49371.

11. Leading Mechanical Engineer I. H. NAHDHAR, O. No : 66125.

12. Stores Assistant NARAYAN CHANDRA SARKAR, O. No : 80984.

13. Able Seaman DAYA NAND, O. No : 87857.

14. Able Seaman RAM SARAN SINGH, O. No. : 86482.

On 25th December 1964, INS Sharda was engaged in operations for the rescue of the people who had been marooned as a result of a severe tidal wave in Dhanushkodi. Sub-Lieutenant Appukuttan, who was serving as the Executive Officer of INS Sharda, volunteered to lead a small party of sailors to swim ashore in extremely adverse weather conditions in order to establish communications. Disregarding personal safety, Sub-Lieutenant Appukuttan and the other sailors of the rescue party worked untiringly for a long period and rescued a total of 1500 persons.

In this operation, Sub-Lieutenant T. Appukuttan and the members of his party displayed courage, determination and devotion to duty which were in the best traditions of the Indian Navy.

15. Steward KARTAR SINGH, O. No : 80276.

On 27th February 1964, INS Akshay was anchored in Casurina Bay, Andamans. A reconnaissance party left the ship in an assault boat in order to reconnoitre the beaches of Casurina Bay. On completion of reconnaissance, the party tried to launch the boat three times, but failed to do so as it got swamped by the heavy surf. Another assault boat was sent with a rescue party of which steward Kartar Singh was a member. The rescue boat had to anchor clear of breakers and swell at some distance from the beach. In the intervening distance heavy surf prevailed with waves 5 to 6 ft. high. Despite these conditions, Kartar Singh volunteered to swim to the beach with a line. He reached the beach safely and the line was used to haul in the swamped assault boat. As there was no other line available, he had to return with the boat and make another attempt to get the line across to the marooned men. Having done this, the line was used as a rope-way for the marooned men to haul themselves out of the buffeting breakers to the rescue boat. One of them who had swallowed water when the boat capsized in an earlier attempt to launch it, was unable to swim up to the rescue boat even with the help of the rope-way. Disregarding his personnel safety, Kartar Singh once again swam to the beach and pulled him out of the surf and brought him into the rescue boat.

In this action, Steward Kartar Singh displayed exemplary Courage and devotion to duty which were in the best traditions of the Indian Navy.

16. Telegraphist Diver III-MADAN GOPAL SANDAL, O. No. 47655.

During the period from 3rd May 1965 to 3rd June 1965, Telegraphist Diver M. G. Sandal was one of the Naval divers engaged in operations at the Tungabhadra Dam. He was assigned the task of underwater welding of the penstock gates of the hydro-electric project. The work was intricate and urgent and involved sustained work under water. He had to go up and down a ladder several times a day, fully dressed in a standard diving suit which weighs as much as a man. With remarkable stamina he negotiated the climb, after the exhausting work under water. In spite of heavy strain, Telegraphist Sandal continued work without rest and successfully completed the job. This enabled the electric supply to be resumed earlier than anticipated.

Subsequently Telegraphist Sandal was given the task of removing the dummy gates of the high level canal at the Tungabhadra Dam. Surface waves 3 to 4 feet high made the operation extremely hazardous. Disregarding the risks involved, Telegraphist Sandal carried out the assignment with determination. His work resulted in the clearance of one gate per day as compared to the estimated time of one gate in about four days.

The devotion to duty displayed by Telegraphist Madan Gopal Sandal in these diving operations were in keeping with the highest traditions of the Navy.

No. 24-Pres./66.—The President is pleased to approve the award of the VIR CHAKRA for acts of gallantry to :

Squadron Leader INDER JEET SINGH PARMAR (4835), General Duties (Pilot).

(*Effective date of award—14th September 1965*)

During the operations against Pakistan, Squadron Leader Inder Jeet Singh Parmar carried out sixteen operational sorties out of which seven were low-level reconnaissance missions over enemy concentrations. During these missions, he operated at the extreme limits of the aircraft's radius of action, very often under enemy anti-aircraft and medium machine gun fire. In one of the sorties he inflicted heavy damage to an enemy helicopter on the ground. He also carried out nine night air patrols. On the night of 14th September 1965 he flew four combat sorties in quick succession after having done a tactical reconnaissance sortie in the afternoon. Single-handed, he succeeded in obstructing enemy bombers and putting them off their bombing aim on our airfield and vital radar installations. In two cases he chased the enemy bombers away, before they could drop their bombs.

In these operations, Squadron Leader Inder Jeet Singh Parmar displayed commendable courage and remarkable flying skill.

No. 25-Pres./66.—The President is pleased to approve the award of the ASHOKA CHAKRA, CLASS III, for gallantry to the undermentioned personnel :—

1. Lieutenant SHYAMRATTAN VARMA, I.N.

(*Effective date of award—14th February 1965*)

On 14th February 1965, Lieutenant Shyamrattan Varma was carrying out dummy deck-landings at Goa airfield in a naval Seahawk aircraft. The rear fuselage of the aircraft caught fire and an explosion occurred in the aircraft. Simultaneously, the controls became extremely heavy and the aircraft lost communication with the airfield. There was imminent danger of the aircraft exploding in the air or crashing. Although aware of the risk, Lieutenant Varma did not abandon his aircraft. With cool courage and great skill, he landed the aircraft safely at the airfield.

2. 16635 Flight Sergeant VASUDEVAN PALLAVARAM, Fitter/Armourer.

(*Effective date of award—15th September 1965*)

On the night of 15th/16th September 1965, two aircraft with fuzed bombs in their bomb bays were involved in an accident on the runway of an airfield, as a result of which one of them caught fire. Some of the bombs exploded, others were scattered under the force of explosion and one of them was lodged in a very awkward position in the wing of an aircraft. The scattered bombs were lying on the edge of the runway and one of them had become highly dangerous owing to the heat of the burning wreckage. Normally, bombs in this condition are demolished on the site, but to have done so in this case would have caused further extensive damage.

Unmindful of the risk involved, Flight Sergeant Vasudevan Pallavaram volunteered to render the bombs safe. He accomplished this task successfully. Thereafter he also recovered the bomb which was lodged in the wing of the aircraft defuzed it and made it harmless.

By his successful accomplishment of this hazardous task, willingly undertaken at grave personal risk, Flight Sergeant Vasudevan Pallavaram displayed cool courage and devotion to duty and set an example to his fellow airmen.

3. 48963 Flight Sergeant LINGHA RAGAVIAH, Fitter/Armourer.

(*Effective date of award—15th September 1965*)

On the night of 15th/16th September 1965, two aircraft with fuzed bombs inside their bomb bay were involved in an accident on the runway of an airfield, as a result of which one of them caught fire. Some of the bombs exploded, others were scattered under the force of explosion and one of them was lodged in a very awkward position in the wing of an aircraft. The scattered bombs were lying on the edge of the runway and one of them had become highly dangerous owing to the heat of the burning wreckage. Normally, a bomb in this condition is demolished on the site, but to have done so in this case would have caused further extensive damage.

Unmindful of the risk involved, Flight Sergeant Lingha Ragaviah volunteered to render the bombs safe. He accomplished this task successfully. Thereafter he also recovered the bomb which was lodged in the wing of one of the aircraft, defuzed it and made it harmless.

By his successful accomplishment of this hazardous task, willingly undertaken at grave personal risk, Flight Sergeant Lingha Ragaviah displayed cool courage and devotion to duty and set an example to his fellow airmen.

The 5th February 1966

No. 26-Pres./66.—In substitution of the citation contained in this Secretariat Notification No. 88-Pres./65 dated the 14th August 1965, published in Part I, Section 1 of the Gazette of India on Saturday, the 6th November 1965, the citation below is republished for general information :—

"At the time of the massive Pakistani attack on the Indo-Pakistan border in the Rann of Kutch, in April 1965, Shri Bhausaheb Shivajirao Shirke was commanding a State Reserve Police Garrison at Chhad Bet. When the police post at Sardar was attacked, the enemy concentrated a large force opposite Chhad Bet. Undaunted by this intimidation and the presence of numerically superior forces with heavy armour, Shri Shirke carried out successive patrols along the border till the standing post at Hanuman Talai was shelled on the 21st April 1965. On the 23rd and 24th April, the enemy artillery started shelling Chhad Bet post with MMGs and 3" mortars. The Pakistani forces advanced up to 1,200 yards from the perimeter of the Chhad Bet Post, but the Police force, under the able leadership of Shri Shirke, vigorously engaged the enemy force and repulsed their concentrated attack after a grim fight which lasted for 3 hours.

In this encounter, Shri Bhausaheb Shivajirao Shirke, exhibited conspicous gallantry, exemplary courage, leadership and devotion to duty of a high order."

Y. D. GUNDEVIA, Secy. to the President.

CABINET SECRETARIAT

(Department of Statistics)

New Delhi, the 1st February 1966

No. 8/3/65-Estt. II.—The Government of India has enlarged the membership and functions of the existing 'Technical Advisory Committee on Cost of Living Index Numbers' set up in 1954 by the Ministry of Labour & Employment, and has reconstituted it as the 'Technical Advisory Committee on Statistics of Prices and Cost of Living', with the following membership :

Chairman

1. Director,
Central Statistical Organisation

Members

2. Adviser,
Employment, Labour & Social Planning,
Planning Commission.

3. Economic & Statistical Adviser,
Ministry of Food, Agri., Com. Dev. & Cooperation.

4. Economic Adviser,
Ministry of Finance,
Department of Economic Affairs.

5. Economic Adviser,
Ministry of Industry.

6. Economic Adviser,
Planning Commission.

7. Chief Director,
National Sample Survey,
Department of Statistics.

8. Director,
Labour Bureau,
Ministry of Labour, Employment & Rehabilitation.

9. The Deputy Statistical Adviser,
Reserve Bank of India, Bombay.

10. Director,
State Statistical Bureau,
Government of West Bengal, Calcutta.

11. Director of Statistics,
Government of Madras,
Madras.

12. Director of Economics & Statistics,
Government of Rajasthan,
Jaipur.

13. Head, National Sample Survey Design,
and Appraisal, Indian Statistical Institute,
Calcutta.

2. The representatives of the State Governments will serve on the Committee for a period of 2 years.

3. The functions of the reconstituted Committee will be :

(a) Examination of proposals for the conduct of family budget enquiries by the Central Government or State Governments;

(b) Examination of schemes prepared by the Central Government or the State Governments for the construction of the Cost of Living Index Numbers;

(c) Examination of special difficulties pointed out by the Central Government or the State Governments in the compilation of the Cost of Living Index Numbers;

(d) Improvement of the basis of the Cost of Living Index Numbers, including standardisation of definitions, concepts, etc. and of methods of collection of prices and compilation of index numbers;

(e) Consideration of any special problems in the compilation of a weighted All India Cost of Living Index;

(f) Consideration of any other matter connected with the compilation or publication of Cost of Living Index Numbers; and

(g) Rendering technical advice on matters concerning the compilation, preparation and publication of the Wholesale Price Index.

4. Secretarial assistance to the Committee will be provided by the Central Statistical Organisation.

M. BALAKRISHNA MENON, Dy. Secy.

PLANNING COMMISSION

RESOLUTION

New Delhi, the 9th February 1966

COMMITTEE ON TECHNICAL CONSULTANCY SERVICES

No. I&M-4(9)2/66.—In connection with the establishment of adequate Engineering Design and Consultancy Services to meet the country's requirements for industrial development during the Fourth Plan period and subsequent years, the Planning Commission has decided to constitute a Committee to

(a) study the problems of such consultancy services; and

(b) recommend suitable measures to promote their growth to the requisite extent.

2. The composition of the Committee will be as follows :—

Chairman

1. Shri S. G. Barve,
Member (Industry),
Planning Commission,
New Delhi.

Members

2. Dr. A. Nagaraja Rao,
Adviser (I & M),
Planning Commission,
New Delhi.

3. Shri K. L. Ghei,
Special Secretary,
Deptt. of Coordination,
Ministry of Finance,
New Delhi.

4. Shri K. B. Rao,
O.S.D.
Ministry of Industry,
New Delhi.

5. Shri P. C. Kapoor,
Director-General of Technical Development,
Ministry of Supply & Tech. Development,
New Delhi.

6. Shri G. Jankiram,
Chief Design Engineer,
Heavy Machine Building Unit,
Heavy Engineering Corporation,
Ranchi.

7. Shri R. P. Sinha,
Chief Engineer,
Central Engineering & Design Bureau,
Hindustan Steels Ltd., Ranchi.

8. Dr. K. R. Chakravorty,
General Manager,
Planning & Development Deptt.
Fertilizer Corporation of India,
Sindri.

9. Dr. K. S. Chari,
Central Design & Engineering Unit,
C.S.I.R., New Delhi.

Member-Secretary

10. Shri Hari Bhushan,
Director (Engineering),
Planning Commission, New Delhi.

3. The terms of reference of the Committee are

(i) to assess the extent and types of technical consultancy services required to meet the country's needs during the Fourth Plan period and subsequent years;

(ii) to assess the existing facilities available in the country, in both the public and private sectors, and locate the gaps to be filled;

(iii) to advise on the measures to be taken to fill the gaps;

(iv) to suggest the general type of organisational patterns, for the technical consultancy establishments, which will be suitable for our conditions;

(v) to advise on the pattern of technical collaboration or association, which may be necessary for drawing on foreign technical know-how to the required extent; and

(vi) to recommend suitable measures to expedite the establishment of the technical consultancy services to the requisite extent in this country.

4. The headquarters of the Committee will be at New Delhi but the Committee may visit such places as may be considered necessary for its work.

5. The Committee is expected to submit its report within a period of six months.

ORDER

ORDERED that a copy of the Resolution be communicated to all Ministries of the Government of India and others concerned.

ORDERED also that the Resolution be published in the Gazette of India for general information.

M. BUTT, Jt. Secy.

MINISTRY OF LAW

(Department of Company Affairs)

ORDER

New Delhi, the 7th February 1966

No. 51/1/65-CL. II.—In pursuance of sub-clause (ii) of clause (b) of sub-section (4) of section 209 of the Companies Act, 1956 (1 of 1956), the Central Government hereby authorises the under-mentioned Officer of the Government of India, in the Ministry of Law, (Department of Company Affairs) for the purposes of said section 209.

1. Shri S. S. Seth,
Senior Technical Assistant, New Delhi.

B. M. MITRA, Jt. Secy.

MINISTRY OF FOOD, AGRICULTURE, COMMUNITY DEVELOPMENT AND COOPERATION

(Department of Food)

RESOLUTION

New Delhi, the 29th January 1966

No. 21(27)(1)/64-*Tech. I.*—1. In furtherance of the notification No. 21(27)/64-Tech.I dated the 30th September, 1964, promulgating the Cold Storage Order 1964, it has been decided to constitute for a period of two years from the 1st January, 1966 a Committee to be called Central Cold Storage Advisory Committee to advise the Government on matters relating to the said Order. Tre membership of the Committee will be as follows :—

Chairman

Joint Secretary (in-charge of Subsidiary Food Organisation).

Members

1. Agricultural Marketing Adviser to the Government of India, Directorate of Marketing & Inspection, Nagpur.
2. Executive Director, Food & Nutrition Board, Ministry of Food and Agriculture (Department of Food).
3. Director of Central Food Technological Research Institute, Mysore.
4. A representative of I.C.A.R.
5. Fisheries Development Adviser or his nominee.
6. Dairy Development Adviser or his nominee.
7. Managing Director, Central Warehousing Corporation or his nominee.
8. Representative of the Ministry of Community Development & Co-operation.
9. One representative each of the depositors of (i) Fish and Meat, (ii) Fruits and Vegetables (excluding potatoes), (iii) Dairy Products, and (iv) Potatoes to be nominated by the Licensing Authority.
10. One representative of the Refrigeration equipment and Machinery Dealers/Manufacturers to be nominated by the Licensing Authority.
11. Five representatives of Cold Storage Licensees to be nominated by the Licensing Officer. Out of these five, one representative will be from Co-operative Cold Storage.

Member-Secretary

Deputy Director (Refrigeration), Ministry of Food & Agri. (Department of Food).

2. A member of the Committee shall hold office for the period for which the committee has been constituted, provided that a member may resign his office by notice in writing given to the Licensing Officer.

3. If a vacancy occurs by death, resignation, efflux of time, or otherwise in the office of any nominated member of the Committee, the vacancy so caused shall be filled by nomination by the authority which nominated him under clause (2) and any person appointed to fill casual vacancy shall hold office as long only as the member in whose place he is nominated would have been in office.

4. The quorum of the Committee shall be seven. Subject thereto, the Committee may act notwithstanding any vacancy in its members.

5. The Committee may regulate its proceedings in such manner as it thinks fit, but on any matter on which the votes of the Committee are equally divided, the Chairman or the person presiding at the Committee shall have a second or casting vote.

6. The functions of the Committee shall be to advise the Ministry on matters pertaining to the enforcement of this order and planned development of Cold Storage Industry.

7. The Central Government may at any time, if it so deems expedient in the public interest by order dissolve the Committee and thereupon the Committee shall stand dissolved and all persons nominated to the Committee shall cease to be members thereof with effect from the date of the order.

Provided that the Central Government shall take steps to reconstitute the Committee as soon as possible in the manner provided in clause (1).

ORDER

ORDERED that a copy of the resolution be sent to all the State Governments and Administrations.

ORDERED also that the resolution be published in the Gazette of India, for general information.

R. BALASUBRAMANIAN, Jt. Secy.

MINISTRY OF TRANSPORT AND AVIATION

(Department of Transport, Shipping and Tourism)

(Transport Wing)

PORTS

RESOLUTIONS

New Delhi, the 3rd February 1966

No. 13-*PG*(90)/65.—The Government of India have received the Administration Report of the Port of Madras for the year 1964-65. The following are the noteworthy features in the Report :—

1. *FINANCIAL POSITION*

The actual net revenue receipts of the Port Trust for the year under review amounted to Rs. 444.77 lakhs as against Rs. 436.63 lakhs in the previous year.

The net expenditure for the year, including debt charges, amounted to Rs. 376.85 lakhs as against Rs. 307.41 lakhs during the previous year. The increase in expenditure was mainly under the heads "General charges" and "Wet Dock charges".

During the year under review, the Port Trust contributed a sum of Rs. 130 lakhs to its Capital account, Rs. 33.12 lakhs to the Renewals and Replacements Fund and Rs. 1 lakh to the General Insurance Fund.

The receipts and expenditure of the Pilotage Fund amounted to Rs. 10.06 lakhs and Rs. 11.60 lakhs respectively. The expenditure included a contribution of Rs. 4 lakhs to the Revenue Account.

The balances in the various Reserve Funds at the end of the year amounted to Rs. 2.83 crores. Besides, there was a closing balance of Rs. 74.34 lakhs in the Revenue and Pilotage Account.

Outstanding Loans

(i) The total amount of loan due to the Government of India as outstanding at the end of the year under review was Rs. 4.67 crores.

(ii) A sum of Rs. 49 lakhs was drawn from the International Bank for Reconstruction and Development during the year, bringing the total amount of the loan drawn up to the 31st March 1965, to Rs. 4.43 crores out of a total amount of Rs. 6.67 crores agreed to by the Bank as loan.

2. *TRAFFIC*

There was a general increase in the volume of trade passing through the port during the year. The figures of dead weight tonnage of imports and exports which passed through the port during the year were 2,992,865 and 1,405,283 respectively. The corresponding figures for the previous year were 2,588,757 tonnes (Imports) and 1,577,005 tonnes (Exports). The increase in imports was due to sharp increase of imports of foodgrains on Government account. The decline in exports was mainly on Manganese ore, Groundnut oil, Molasses and sugar.

The total volume of coastal trade for the year 1964-65 was 1,197,141 tonnes as against 1,172,409 tonnes in the previous year. Foreign trade rose from 2,993,353 tonnes in 1963-64 to 3,201,007 tonnes in 1964-65.

3. *SHIPPING*

The number of ships, excluding sailing vessels, that entered the port during the year was 1,343 as against 1,289 in the previous year. The net tonnage was 5,463,647 as against 5,246,798 during the previous year. Two sailing vessels, with a net tonnage of 285 arrived during the year as against four sailing vessels with a net tonnage of 564 in the previous year.

During the year under review, 94,181 passengers used the port as against 61,211 passengers in the previous year.

4. *LABOUR*

The labour situation during the year was satisfactory. Labour Welfare measures continued to receive special attention.

5. *WORKS*

(i) Side walls for the Wet Dock were completed. The total expenditure up to March 1965, amounted to Rs. 286.86 lakhs.

(ii) The deep dredging of the new Wet Dock to 31 feet has been completed and all the six berths have been commissioned to ship traffic.

(iii) During the year under review seven 3-ton cranes were taken over. Two five-ton cranes were under fabrication and erection, and one ten-ton crane was ready for trial.

(iv) The reconstruction of South Quay-I was in progress.

(v) The work of construction of a double storeyed Transit Shed, at an estimated cost of Rs. 23.60 lakhs, was in progress.

(vi) Work on the remodelling of the Boat Basin was in progress.

(vii) Work on the reclamation of the Royapuram Bay was completed.

(viii) The work relating to the laying of a separate water main from Kilpauk to the Port premises was in progress and about 90% of the work had been completed.

6. *MISCELLANEOUS*

The Board introduced an incentive scheme for good attendance of workers essentially required for the movement of cargo. Third shift working has been retained on a permanent basis.

Acknowledgment

The Port Trust Board performed another year of useful work and Government view with appreciation the work done by the Board during the year under review.

No. 8-*PG*(148)/65.—The Government of India have received the Administration Report of the Port of Bombay for the year 1964-65. The note-worthy features of the Report are reviewed below :—

2. *Financial Position* : The total revenue of the Port Trust during the year under review was Rs. 1,739.81 lakhs as against Rs. 1,633.73 lakhs in the year 1963-64. The total expenditure during the year 1964-65 was Rs. 1,593.71 lakhs as against Rs. 1,483.02 lakhs in the previous year. There was thus a surplus of Rs. 146.10 lakhs in 1964-65 against Rs. 150.71 lakhs in 1963-64. The appreciable increase in receipts was mainly due to higher income from wharfage, settlement of certain arrears of rent and demurrage fees. The increase in expenditure is mainly under the heading "General charges and Wet Docks and Railway Department" due to increase in dearness allowance and the grant of interim relief to the Port staff.

The total balances in the Port Trust's Reserve Funds amounted to Rs. 34.45 crores at the end of the year 1964-65. Of the outstanding debt of Rs. 16.05 crores, the amount due to the public was Rs. 6.18 crores and to Government Rs. 8.75 crores, the balance of Rs. 1.12 crores being internal loans held by the Trustees themselves. For repayment of loans, the trustees have built up a balance of Rs. 6.27 crores in the General Sinking Fund and of Rs. 3.57 crores in a Suspense Account to repay the loan taken from Government.

3. *Traffic* : The dead weight tonnage handled at the Port during 1964-65 was 17,345,000 of which Imports accounted for 12,133,000 tonnes and Export 5,212,000. The corresponding imports and exports of the previous year were 11,885,000 and 5,464,000 tonnes respectively, totalling 17,349,000 tonnes.

The number of overseas passengers who used the port during 1964-65 was 1,29,535, while the number of coastal passengers was 748,134.

4. *Shipping* : The number of vessels, which entered the Port during the year 1964-65 was 3,135 of 22.04 million gross registered tonnes, as against 3,276 of 22.56 million tonnes in 1963-64. The largest vessel, which entered the Port during the year was the s.s. "Mobil Daylight", with a gross tonnage of 58,153.

The number of sailing vessels that used the port during the year 1964-65 was 32,055 as against 38,027 during the year 1963-64.

During the year 1964-65 110 vessels used the Dry Docks. The number of vessels which were berthed in the Wet Docks for repair purposes was 174, including 29 vessels berthed at the Alexandra Docks.

5. *Works* :The following are some of the important works on which expenditure was incurred during the year 1964-65 :—

	Name of Works	*Expenditure in Lakhs of rupees*
(1)	Dock Expansion Scheme (1962)	35.32
(2)	Butcher Island Scheme	11.13
(3)	Dredging of the main harbour channel. Main Scheme—Phase I & II.	6.45
(4)	Preparation of the Master Plan for the Port of Bombay	6.24
(5)	Purchase of a 125-ton Floating Crane 'Shravan' in replacement of F.C. 'Sarus'.	5.68
(6)	Extension of the Administrative Offices Building.	9.10
(7)	Building a Hospital for Port Trust staff.	6.55
(8)	Construction of quarters for non-scheduled staff at Antop Village.	6.78
(9)	Purchase and erection of 54 Nos. Electric Wharf Cranes in Alexandra Dock.	33.20
(10)	Construction of a new bridge in replacement of the existing Rim Bascule Bridge over the Entrance Lock, Alexandra Dock.	13.80
(11)	Renewals of rails and sleepers.	11.75

6. *Port Trust Railway* : There was an appreciable increase in the volume of local traffic. The comparative figures in terms of wagons and tonnage for 1963-64 and 1964-65 are as follows :—

	Wagons		*Tonnes*
	Inward	*Outward*	
1963-64	9,335	15,764	319,000
1964-65	14,584	22,890	432,000

The volume of trunk traffic, however, showed a decline as compared to 1963-64 as is evident from the following table :—

	Wagons		*Tonnes*
	Inward	*Outward*	
1963-64	113,408	143,738	4,626,700
1964-65	111,979	143,055	4,482,100

The results of the working of the Bombay Port Trust Railway during 1963-64 and 1964-65, as worked out in accordance with the revised method approved by the Trustees, are as follows :—

	Revenue	*Expenditure*	*Surplus(+) Deposit(—)*
	Rs. lakhs	*Rs. lakhs*	*Rs. lakhs*
1963-64	130.93	154.80	(—) 23.87
1964-65	129.01	167.86	(—) 38.85

The greater loss in the working of the Railway during 1964-65 is due to slight decline in the receipts as well as considerable increase in expenditure due to rise in the establishment cost, as a result of the enhancement of the rates of dearness allowance.

7. *Turn round of shipping and pace of loading and unloading of vessels*

The highest number of vessels using the Docks during the year 1964-65 was 100 during the fortnight ended the 31st March 1965. The average turn-round during that fortnight was 4.1 days as against the slowest turn-round of 6 days during the fortnight ended 30th September 1964, when 66 vessels used the Docks.

The fastest rate of unloading and loading of vessels, which worked 1,000 tonnes and over during the year 1964-65, was as follows :

(*In tonnes*)

	Fastest average rate per day of turn-round	
	1963-64	1964-65
Unloading (Imports)	2,640	3,279
Loading (Export)	1,680	2,662

The cargo handled under the Piece rate scheme was 125% over the datum in 1964-65.

8. *Labour* : There were some occasions of stoppage of work by Port Workers during the year under review.

The Port Trust's Welfare measures covered a variety of activities namely, sports, recreations, variety entertainment, excursions, scholarships, canteens, general medical attention, women's clinics, reading rooms, and libraries, etc.

9. *Staff* : The total expenditure on staff during 1964-65 amounted to Rs. 835.12 lakhs, as against Rs. 731.02 lakhs in the previous year. The upward revision of rates of dearness allowance payable to Class III and Class IV staff, effected twice during the year, accounted for a major part of the increase of Rs. 104.10 lakhs in 1964-65 over the expenditure in 1963-64. An increase in salaries, wages and allowances due to the engagement of additional staff on both the Scheduled and non-scheduled establishments and more payments on account of arrears due to revision of pay scales and of overtime allowances were the other reasons for the increase.

The total expenditure on medical aid amounted to Rs. 8.86 lakhs during 1964-65 as against Rs. 6.88 lakhs in the previous year.

9. The Port Trust Board carried out another year of useful work and the Government of India view it with appreciation.

The 7th February 1966

No. 21-*T*(42)/64.—Shri S. M. Bhattacharya, Secretary to the Government of West Bengal, Home (Transport) Department, has been nominated as a member of the Road Transport Taxation Enquiry Committee set up *vide* this Ministry's Resolution No. 21-T(42)/64 dated the 6th September 1965, in place of Shri S. Mullick.

ORDER

ORDERED that a copy of the Resolution be communicated to all concerned and also that it be published in the gazette of India for general information.

No. 1-*T*(150)/64.—Shri V. Sankaran, Joint Transport Commissioner, Madras, has been nominated to work on the Study Group on Viable Units appointed *vide* this Ministry's Resolution No. 1-T(150)/64, dated the 27th May, 1965, in place of Shri C. Sundaramoorthy.

ORDER

ORDERED that a copy of the Resolution be communicated to all concerned and that it be published in the Gazette of India, for general information.

N. P. MATHUR, Jt. Secy.

MINISTRY OF IRRIGATION & POWER

RESOLUTION

New Delhi, the 10th February 1966

No. DW.V.502(10)/65.—In continuation of this Ministry's Resolution of even number dated the 5th June, 1965, the time for submission of the report by the Technical Committee constituted to review the present position of investigations on the Barak Dam Project and also to consider whether a dam should be constructed or alternative proposals have to be considered, is extended up to the 31st March, 1966.

ORDER

ORDERED that this Resolution be communicated to the State Government of Assam, the Prime Minister's Sectt., the Private and Military Secretaries to the President, the Comptroller and Auditor General of India and the Planning Commission for information.

ORDERED that the Resolution be published in the Gazette of India and the State Government of Assam be requested to publish it in the State Gazette for general information.

P. R. AHUJA, Jt. Secy.

PRINTED IN INDIA BY THE MANAGER, GOVERNMENT OF INDIA PRESS, FARIDABAD AND PUBLISHED BY THE MANAGER OF PUBLICATIONS, DELHI, 1966